नशा मुक्त भारत अभियान

नई किरण नशा मुक्ति केंद्र, राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर

लोकसंकल्प

नशे की सामाजिक स्वीकृति के विरुद्ध जनआंदोलन

नशे को नहीं, संस्कारों को सामाजिक स्वीकृति

नशे की सामाजिक स्वीकृति का समाजशास्त्र

मेरा गांव – मेरा परिवार – मेरा संकल्प – नशामुक्त समाज

loksankalp.org

विषय-सूची

इस पुस्तिका में

1	अध्याय 1 : समस्या नशा नहीं, उससे भी बड़ी समस्या उसकी सामाजिक स्वीकृति	3
2	अध्याय 2 : सामाजिक स्वीकृति का समाजशास्त्र	4
3	अध्याय 3 : नशे की सामाजिक स्वीकृति कैसे बनती है?	7
4	अध्याय 4 : मनुहार, परंपरा और कुरीति	11
5	अध्याय 5 : युवा नशे की ओर क्यों बढ़ते हैं?	15
6	अध्याय 6 : समाधान की ओर	18
7	अध्याय 7 : लोकसंकल्प का कार्यमॉडल	23
8	अध्याय 8 : शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक	28
9	अध्याय 9 : महिलाओं, ग्राम पंचायतों, धार्मिक नेताओं और सामाजिक संगठनों की भूमिका	33
10	अध्याय 10 : लोकसंकल्प का भविष्य	37
	परिशिष्ट 1 : ग्राम लोकसंकल्प सभा आयोजन प्रारूप	41
	परिशिष्ट 2 : लोकसंकल्प ग्राम समिति गठन प्रारूप	43
	परिशिष्ट 3 : मासिक समीक्षा बैठक रजिस्टर	44
	परिशिष्ट 4 : सफलता कहानी (Success Story) प्रारूप	44
	परिशिष्ट 5 : नशामुक्त सामाजिक आयोजन सत्यापन प्रारूप	45
	परिशिष्ट 6 : नशा छोड़ने के इच्छुक व्यक्ति सहायता प्रारूप	45
	परिशिष्ट 7 : लोकसंकल्प वालंटियर पंजीकरण	46
	परिशिष्ट 8 : शिक्षक दिवस विशेष ग्राम संकल्प सभा शपथ	46
	परिशिष्ट 9 : loksankalp.org पर रिपोर्ट अपलोड करने हेतु चेकलिस्ट	47
	परिशिष्ट 10 : लोकसंकल्प घोषणा पत्र	47

www.loksankalp.org

1 अध्याय 1 : समस्या नशा नहीं, उससे भी बड़ी समस्या उसकी सामाजिक स्वीकृति

जब किसी गांव में कोई युवक नशे का आदी हो जाता है, तो सामान्यतः चर्चा उसी व्यक्ति पर केंद्रित हो जाती है।

लोग कहते हैं—

"लड़का बिगड़ गया।" **"उसकी संगति खराब है।"** **"उसे समझ नहीं है।"** **"उसे इलाज की जरूरत है।"**

इन बातों में कुछ सत्य अवश्य है, लेकिन समाजशास्त्र हमें एक और प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करता है—

> **क्या कोई व्यक्ति अकेले नशेड़ी बनता है, या उसके पीछे कोई सामाजिक वातावरण भी काम करता है?**

यदि किसी गांव में कोई भी व्यक्ति तंबाकू का प्रयोग न करता हो, कोई भी सामाजिक आयोजन नशे से जुड़ा न हो, कोई मित्र समूह नशे को सामान्य न मानता हो और समाज में नशा सम्मान का विषय न हो, तो क्या किसी नए व्यक्ति के लिए नशे की शुरुआत करना उतना ही आसान होगा?

संभवतः नहीं।

यही कारण है कि समाजशास्त्र व्यक्ति से पहले उसके सामाजिक परिवेश को देखता है।

www.loksankalp.org

नशा कहाँ से शुरू होता है?

बहुत कम लोग सीधे स्मैक, चिट्टा या अन्य गंभीर नशीले पदार्थों तक पहुँचते हैं।

अधिकांश की यात्रा कहीं अधिक साधारण दिखाई देने वाली चीजों से शुरू होती है—

तंबाकू **गुटखा** **बीड़ी** **सिगरेट** **शराब**

और अक्सर पहली बार इनका सामना किसी न किसी सामाजिक परिस्थिति में होता है।

किसी मित्र के साथ।

किसी बड़े व्यक्ति की नकल करते हुए।

किसी सामाजिक आयोजन में।

किसी उत्सव में।

या फिर उस वातावरण में जहाँ यह सब सामान्य माना जाता है।

इसलिए नशे की कहानी का आरम्भ केवल व्यक्ति से नहीं, बल्कि समाज से होता है।

सामाजिक स्वीकृति क्या है?

सामाजिक स्वीकृति का अर्थ है—

जब कोई व्यवहार समाज में इतना सामान्य हो जाए कि लोग उसे प्रश्नों के घेरे में रखना बंद कर दें।

वह व्यवहार सही है या गलत, यह अलग प्रश्न है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि समाज उसे "सामान्य" मानने लगे।

उदाहरण के लिए—

यदि कोई व्यक्ति अतिथि को पानी या भोजन परोसता है, तो समाज इसे सम्मानजनक व्यवहार मानता है।

लेकिन यदि किसी क्षेत्र में अतिथि को तंबाकू देना भी सम्मान का हिस्सा माना जाने लगे, तो तंबाकू को सामाजिक स्वीकृति मिल चुकी है।

यहीं से समस्या शुरू होती है।

जब कुरीति परंपरा का रूप ले लेती है

इतिहास में अनेक ऐसी प्रथाएँ रही हैं जिन्हें कभी सामान्य माना जाता था।

समय के साथ समाज ने महसूस किया कि वे प्रथाएँ मानव कल्याण के अनुकूल नहीं हैं।

फिर समाज बदला।

सामाजिक मानदंड बदले।

व्यवहार बदले।

आज नशे की सामाजिक स्वीकृति भी उसी प्रकार की चुनौती है।

कई लोग कहते हैं—

> **“यह तो वर्षों से चलता आ रहा है।”**

लेकिन कोई भी व्यवहार केवल इसलिए उचित नहीं हो जाता कि वह पुराना है।

समाज की कसौटी यह होनी चाहिए—

> **क्या यह व्यवहार व्यक्ति, परिवार और समाज के हित में है?**

यदि उत्तर “नहीं” है, तो परिवर्तन आवश्यक है।

लोकसंकल्प का मूल विचार

लोकसंकल्प किसी व्यक्ति को दोषी ठहराने का अभियान नहीं है।

यह किसी समुदाय, जाति, वर्ग या क्षेत्र के विरुद्ध भी नहीं है।

लोकसंकल्प का संघर्ष उस सोच से है जो नशे को सामान्य बनाती है।

क्योंकि जहाँ सामाजिक स्वीकृति होती है, वहाँ मांग पैदा होती है।

जहाँ मांग होती है, वहाँ आपूर्ति आती है।

और जहाँ आपूर्ति आती है, वहाँ व्यसन, बीमारी, अपराध और सामाजिक विघटन का खतरा बढ़ता है।

इसलिए लोकसंकल्प का पहला संदेश है—

> **“नशे की सामाजिक स्वीकृति समाप्त किए बिना नशे की समस्या का स्थायी समाधान संभव नहीं है।”**

अध्याय 1 का चिंतन प्रश्न

क्या आपके क्षेत्र में कोई ऐसा व्यवहार है जिसे लोग परंपरा मानते हैं, लेकिन वह वास्तव में नशे की सामाजिक स्वीकृति को बढ़ाता है?

क्या बच्चों के सामने नशा करना केवल व्यक्तिगत निर्णय है या सामाजिक संदेश भी?

क्या हम अपने सामाजिक आयोजनों में अनजाने में नशे को वैधता प्रदान कर रहे हैं?

अध्याय 1 का सूत्र

> **“नशे का सबसे मजबूत साथी नशेड़ी नहीं, बल्कि उसकी सामाजिक स्वीकृति है।”**

2 अध्याय 2 : सामाजिक स्वीकृति का समाजशास्त्र

समाज किन व्यवहारों को सामान्य बनाता है और क्यों?

प्रस्तावना

यदि कोई व्यक्ति सड़क पर चलते हुए अचानक किसी अजनबी को नमस्कार करे, तो लोग उसे शिष्टाचार मानेंगे।

यदि कोई व्यक्ति मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे या किसी धार्मिक स्थल पर प्रवेश करते समय मर्यादा का पालन करे, तो लोग इसे उचित व्यवहार कहेंगे।

www.loksankalp.org

यदि कोई व्यक्ति अतिथि को पानी, भोजन या बैठने का स्थान दे, तो समाज उसे संस्कारी और सम्मानजनक व्यवहार मानेगा।

हम प्रतिदिन हजारों व्यवहार करते हैं, लेकिन उनमें से अधिकांश के बारे में अलग से सोचते नहीं हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि समाज ने पहले से तय कर रखा है कि कौन-सा व्यवहार सामान्य है, कौन-सा असामान्य, कौन-सा सम्मानजनक और कौन-सा अनुचित।

समाजशास्त्र इन्हीं अदृश्य नियमों का अध्ययन करता है।

लोकसंकल्प का मानना है कि नशे की समस्या को समझने के लिए सबसे पहले यह समझना होगा कि समाज किसी व्यवहार को सामाजिक स्वीकृति कैसे देता है।

समाज एक अदृश्य शिक्षक है

हम प्रायः सोचते हैं कि हमें केवल माता-पिता, शिक्षक या पुस्तकें सिखाती हैं।

लेकिन वास्तव में समाज स्वयं भी एक शिक्षक है।

समाज हमें सिखाता है—

- कैसे बोलना है,
- कैसे पहनना है,
- किसका सम्मान करना है,
- किन बातों को स्वीकार करना है,
- किन बातों का विरोध करना है।
- बचपन से ही हम अपने आसपास देखकर सीखते हैं।

यदि किसी व्यवहार को बार-बार होते हुए देखते हैं, तो हम उसे सामान्य मानने लगते हैं।

इसे समाजीकरण (Socialization) कहा जाता है।

www.loksankalp.org

सामाजिक मानदंड (Social Norms) क्या हैं?

सामाजिक मानदंड वे अनलिखे नियम हैं जो बताते हैं कि समाज में कौन-सा व्यवहार स्वीकार्य है।

उदाहरण:

विद्यालय में शिक्षक का सम्मान करना।

राष्ट्रीय ध्वज का आदर करना।

बुजुर्गों का सम्मान करना।

सार्वजनिक स्थानों पर मर्यादित व्यवहार करना।

ये सब सामाजिक मानदंड हैं।

समस्या तब पैदा होती है जब कोई हानिकारक व्यवहार भी सामाजिक मानदंड का रूप ले लेता है।

उदाहरण के लिए—

यदि किसी क्षेत्र में अधिकांश लोग यह मानते हों कि किसी सामाजिक अवसर पर तंबाकू परोसना सामान्य बात है, तो धीरे-धीरे यह भी सामाजिक मानदंड बन जाता है।

लोग उसे गलत मानना बंद कर देते हैं।

यहीं सामाजिक स्वीकृति जन्म लेती है।

एमिल दुर्खीम और समाज की शक्ति

प्रसिद्ध समाजशास्त्री Émile Durkheim का मानना था कि समाज केवल व्यक्तियों का समूह नहीं है।

समाज स्वयं एक शक्ति है।

वह लोगों के विचारों, भावनाओं और व्यवहारों को प्रभावित करता है।

दुर्खीम ने कहा कि कई बार व्यक्ति वही करता है जो समाज उससे अपेक्षा करता है।

यदि समाज किसी व्यवहार को सम्मान देता है, तो लोग उसे अपनाने की संभावना अधिक रखते हैं।

यदि समाज किसी व्यवहार को अस्वीकार करता है, तो लोग उससे बचने लगते हैं।

लोकसंकल्प का मूल विचार इसी सिद्धांत से जुड़ा है।

सामाजिक स्वीकृति कैसे बनती है?

किसी व्यवहार को सामाजिक स्वीकृति मिलने की प्रक्रिया धीरे-धीरे होती है।

पहला चरण : पुनरावृत्ति

कोई व्यवहार बार-बार होता है।

दूसरा चरण : सामान्यीकरण

लोग उसे सामान्य मानने लगते हैं।

तीसरा चरण : वैधता

लोग उसे उचित ठहराने लगते हैं।

चौथा चरण : परंपरा

लोग कहते हैं—

> **“यह तो हमेशा से होता आया है।”**

और तब वह व्यवहार सामाजिक स्वीकृति प्राप्त कर लेता है।

परंपरा और कुरीति में अंतर

हर पुरानी चीज़ परंपरा नहीं होती।

और हर परंपरा समाज के हित में हो, यह भी आवश्यक नहीं।

एक महत्वपूर्ण प्रश्न हमेशा पूछा जाना चाहिए—

> **क्या यह व्यवहार व्यक्ति, परिवार और समाज के कल्याण में योगदान देता है?**

यदि उत्तर “नहीं” है, तो उस व्यवहार की समीक्षा आवश्यक है।

समाज सुधार के इतिहास में अनेक परिवर्तन इसी प्रकार हुए हैं।

परिवर्तन तब संभव हुआ जब समाज ने पहली बार यह साहस किया कि वह किसी व्यवहार को केवल इसलिए स्वीकार न करे क्योंकि वह पुराना है।

सामाजिक स्वीकृति और मौन समर्थन

कई बार लोग स्वयं नशा नहीं करते, फिर भी नशे की सामाजिक स्वीकृति को बनाए रखने में योगदान देते हैं।

कैसे?

जब वे नशे को सामान्य मान लेते हैं।

जब वे विरोध नहीं करते।

जब वे बच्चों के सामने इसे स्वीकार्य व्यवहार की तरह प्रस्तुत करते हैं।

जब वे सामाजिक आयोजनों में इसे प्रश्नों के घेरे में नहीं लाते।

समाजशास्त्र में इसे “मौन वैधता” (Silent Legitimization) कहा जा सकता है।

यानी हम किसी व्यवहार को सक्रिय रूप से बढ़ावा न दें, फिर भी उसे चुनौती न देकर उसकी स्वीकृति बनाए रखें।

सामाजिक अस्वीकृति की शक्ति

यदि सामाजिक स्वीकृति किसी व्यवहार को बढ़ा सकती है, तो सामाजिक अस्वीकृति उसे कम भी कर सकती है।

www.loksankalp.org

जब समाज स्पष्ट संदेश देता है कि—

- यह व्यवहार सम्मानजनक नहीं है,
- यह स्वस्थ नहीं है,
- यह भविष्य के लिए अच्छा नहीं है,
- तो धीरे-धीरे सामाजिक मानदंड बदलने लगते हैं।

लोकसंकल्प का उद्देश्य किसी व्यक्ति का बहिष्कार करना नहीं है।

लोकसंकल्प का उद्देश्य हानिकारक व्यवहारों की सामाजिक स्वीकृति को चुनौती देना है।

लोकसंकल्प का दृष्टिकोण

लोकसंकल्प कहता है—

समस्या केवल यह नहीं कि कुछ लोग नशा करते हैं।

समस्या यह भी है कि समाज कई बार नशे को सामान्य मान लेता है।

इसलिए परिवर्तन की शुरुआत व्यक्ति से भी होगी और समाज से भी।

हम किसी व्यक्ति को दोषी नहीं ठहराएँगे।

हम संवाद करेंगे।

हम जागरूकता बढ़ाएँगे।

हम नए सामाजिक मानदंड विकसित करेंगे।

हम नशामुक्त जीवन को सम्मान देंगे।

www.loksankalp.org

चिंतन के लिए प्रश्न

आपके गांव या समुदाय में कौन-से ऐसे व्यवहार हैं जिन्हें लोग सामान्य मानते हैं, लेकिन वे नशे की सामाजिक स्वीकृति को बढ़ाते हैं?

क्या सामाजिक मौन भी किसी समस्या को बढ़ा सकता है?

क्या केवल कानून बनाकर सामाजिक व्यवहार बदले जा सकते हैं?

समाज किन व्यवहारों को सम्मान देता है और क्यों?

अध्याय 2 का सूत्र

> **"जिस व्यवहार को समाज सामान्य मान लेता है, उसे बदलना कठिन हो जाता है। इसलिए लोकसंकल्प का लक्ष्य व्यक्ति नहीं, सामाजिक मानदंडों का परिवर्तन है।"**

3 अध्याय 3 : नशे की सामाजिक स्वीकृति कैसे बनती है?

परिवार, मित्र समूह, सामाजिक आयोजन, मीडिया और बाज़ार की भूमिका

प्रस्तावना

कोई भी बच्चा जन्म से न तो तंबाकू जानता है, न शराब, न किसी अन्य नशीले पदार्थ को।

वह यह सब सीखता है।

समाजशास्त्र का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है कि अधिकांश सामाजिक व्यवहार सीखे जाते हैं।

जिस प्रकार भाषा सीखी जाती है, उसी प्रकार अनेक सामाजिक आदतें भी सीखी जाती हैं।

नशे की सामाजिक स्वीकृति भी अचानक पैदा नहीं होती। यह धीरे-धीरे समाज के विभिन्न संस्थानों के माध्यम से निर्मित होती है।

परिवार, मित्र समूह, विद्यालय, सामाजिक आयोजन, मीडिया और बाजार—सभी मिलकर यह तय करते हैं कि कोई व्यवहार सामान्य माना जाएगा या नहीं।

इस अध्याय में हम समझेंगे कि नशे की सामाजिक स्वीकृति का निर्माण कैसे होता है।

1 परिवार : सामाजिक स्वीकृति की पहली प्रयोगशाला

किसी भी बच्चे का पहला विद्यालय उसका परिवार होता है।

बच्चा अपने माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों को देखकर सीखता है।

समाजशास्त्री इसे "अनुकरण द्वारा सीखना" (Learning through Observation) कहते हैं।

यदि घर में बार-बार निम्न दृश्य दिखाई देते हैं—

भोजन के बाद तंबाकू खाना,

अतिथि के आने पर तंबाकू या बीड़ी प्रस्तुत करना,

तनाव होने पर शराब का सहारा लेना,

बच्चों के सामने धूम्रपान करना,

तो बच्चा इन व्यवहारों को असामान्य नहीं समझता।

उसे लगता है—

"बड़े लोग ऐसा करते हैं, इसलिए यह सामान्य होगा।"

यहीं सामाजिक स्वीकृति का पहला बीज बोया जाता है।

बच्चे हमारी बातें नहीं, हमारा व्यवहार सीखते हैं

अक्सर माता-पिता बच्चों से कहते हैं—

> **"नशा मत करना।"**

लेकिन यदि वही माता-पिता स्वयं नशा करते हैं तो बच्चे के सामने दो विरोधी संदेश जाते हैं।

एक शब्दों से।

दूसरा व्यवहार से।

और अधिकांश मामलों में बच्चे व्यवहार से सीखते हैं।

इसलिए लोकसंकल्प मानता है—

नशामुक्त परिवार, नशामुक्त समाज की पहली शर्त है।

2 मित्र समूह : स्वीकार्यता की खोज

किशोरावस्था और युवावस्था में व्यक्ति के जीवन में मित्रों का प्रभाव अत्यधिक बढ़ जाता है।

यह वह आयु होती है जब व्यक्ति स्वयं से पूछ रहा होता है—

मैं कौन हूँ? **लोग मुझे कैसे देखते हैं?**

मैं किस समूह का हिस्सा हूँ?

इस अवस्था में समूह की स्वीकृति अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

पहला प्रयोग क्यों होता है?

अनेक युवाओं से बातचीत में एक बात बार-बार सामने आती है—

उन्होंने नशे की शुरुआत इसलिए नहीं की क्योंकि उन्हें उसकी आवश्यकता थी।

उन्होंने शुरुआत इसलिए की क्योंकि—

- मित्रों ने कहा।
- समूह में स्वीकार होना था।
- मज़ाक उड़ाए जाने का डर था।
- साहसी दिखना था।
- आधुनिक दिखना था।

यानी कई बार नशे का पहला प्रयोग पदार्थ के कारण नहीं, बल्कि सामाजिक दबाव के कारण होता है।

"सब कर रहे हैं" का भ्रम

समाजशास्त्र में इसे "Perceived Norm" कहा जाता है।

कई बार युवा यह मान लेते हैं कि—

- "सभी लोग ऐसा कर रहे हैं।"
- जबकि वास्तविकता में ऐसा नहीं होता।

लेकिन यह धारणा ही व्यवहार को प्रभावित करने लगती है।

लोकसंकल्प इसी भ्रम को तोड़ना चाहता है।

www.loksankalp.org

3 सामाजिक आयोजन : सामाजिक स्वीकृति का सार्वजनिक मंच

यदि परिवार पहली प्रयोगशाला है, तो सामाजिक आयोजन सामाजिक स्वीकृति का सार्वजनिक मंच हैं।

यहीं व्यवहारों को सामाजिक मान्यता मिलती है।

एक गंभीर प्रश्न

कल्पना कीजिए—

किसी विवाह, पारिवारिक समारोह, सामुदायिक भोज या शोक सभा में किसी व्यक्ति को तंबाकू, बीड़ी, गुटखा या अन्य नशीला पदार्थ सम्मानपूर्वक प्रस्तुत किया जाता है।

उस समय उपस्थित बच्चे क्या सीखते हैं?

वे यह सीखते हैं कि—

"यह सम्मान की वस्तु है।" | **यही सामाजिक स्वीकृति है।** | **मनुहार या सामाजिक कुरीति?**

लोकसंकल्प का मानना है कि हमें इस प्रश्न पर गंभीरता से विचार करना होगा।

अतिथि को भोजन कराना सम्मान है।

पानी पिलाना सम्मान है।

स्नेहपूर्वक स्वागत करना सम्मान है।

लेकिन किसी ऐसे पदार्थ को प्रस्तुत करना जो स्वास्थ्य को हानि पहुँचाता हो, व्यक्ति को व्यसन की ओर ले जा सकता हो और परिवारों को प्रभावित करता हो—क्या वास्तव में सम्मान कहा जा सकता है?

शोक सभा और विरोधाभास

कई स्थानों पर मृत्यु उपरांत आयोजित बैठकों या शोक सभाओं में भी तंबाकू या अन्य नशीले पदार्थों का उपयोग देखने को मिलता है।

यह स्थिति विशेष रूप से विचारणीय है।

किसी दिवंगत व्यक्ति की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम का उद्देश्य जीवन, मूल्य और संबंधों को याद करना होना चाहिए।

यदि वही अवसर नशे के सामाजिक प्रसार का माध्यम बन जाए, तो हमें स्वयं से प्रश्न पूछना चाहिए—

क्या यह वास्तव में श्रद्धांजलि है?

या एक ऐसी सामाजिक आदत जिसे हमने बिना सोचे स्वीकार कर लिया है?

4 मीडिया और मनोरंजन उद्योग

आज का युवा केवल अपने गांव या परिवार से नहीं सीखता।

वह मोबाइल स्क्रीन से भी सीखता है।

वह प्रतिदिन सैकड़ों दृश्य देखता है।

फिल्में।

वेब सीरीज।

म्यूजिक वीडियो।

रील्स।

शॉर्ट वीडियो।

ऑनलाइन प्रभावक (Influencers)।

नशे का रोमांटीकरण

कई बार नशे को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है—

- विद्रोह का प्रतीक
- आधुनिकता का प्रतीक
- सफलता का प्रतीक
- तनाव से मुक्ति का साधन

www.loksankalp.org

आकर्षक जीवन शैली का हिस्सा

जब किसी व्यवहार को बार-बार आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो उसकी सामाजिक स्वीकृति बढ़ सकती है।

डिजिटल संस्कृति का नया खतरा

आज का किशोर कई बार अपने परिवार से अधिक समय डिजिटल दुनिया में बिताता है।

यदि डिजिटल दुनिया बार-बार यह संदेश दे रही है कि नशा “कूल” है, तो यह एक नई सांस्कृतिक चुनौती बन जाती है।

लोकसंकल्प का मानना है कि डिजिटल साक्षरता अब नशामुक्ति का भी हिस्सा है।

5 बाज़ार और नशे की अर्थव्यवस्था

नशे की सामाजिक स्वीकृति केवल संस्कृति का प्रश्न नहीं है।

यह अर्थव्यवस्था का भी प्रश्न है।

जहाँ मांग होती है, वहाँ बाज़ार विकसित होता है।

और जहाँ बाज़ार होता है, वहाँ उत्पाद को सामान्य बनाने के प्रयास भी होते हैं।

मांग कौन पैदा करता है?

कई बार हम सोचते हैं कि बाज़ार केवल मांग पूरी करता है।

लेकिन आधुनिक विपणन (Marketing) कई बार मांग भी पैदा करता है।

वह जीवन शैली बेचता है।

पहचान बेचता है।

प्रतिष्ठा बेचता है।

और फिर उत्पाद बेचता है।

इसलिए नशे की सामाजिक स्वीकृति को समझना बाज़ार की भूमिका को समझे बिना संभव नहीं है।

लोकसंकल्प क्या करना चाहता है?

लोकसंकल्प किसी व्यक्ति के विरुद्ध नहीं है।

लोकसंकल्प उन सामाजिक प्रक्रियाओं को समझना और बदलना चाहता है जो नशे को सामान्य बनाती हैं।

इसलिए लोकसंकल्प का कार्यक्षेत्र है—

- ✔ परिवार
- ✔ विद्यालय
- ✔ ग्राम सभा
- ✔ युवा समूह
- ✔ सामाजिक आयोजन
- ✔ मीडिया साक्षरता
- ✔ सामुदायिक नेतृत्व

अध्याय 3 का निष्कर्ष

कोई भी व्यक्ति अकेले नशे की ओर नहीं बढ़ता।

उसके आसपास एक सामाजिक वातावरण होता है।

परिवार, मित्र समूह, सामाजिक आयोजन, मीडिया और बाज़ार—सभी मिलकर यह तय करते हैं कि नशे को चुनौती मिलेगी या स्वीकृति।

यदि सामाजिक स्वीकृति नशे को मजबूत बना सकती है, तो सामाजिक अस्वीकृति उसे कमजोर भी कर सकती है।

यही लोकसंकल्प का विश्वास है।

www.loksankalp.org

चिंतन प्रश्न

आपके गांव या समुदाय में नशे की सामाजिक स्वीकृति किन रूपों में दिखाई देती है?

क्या बच्चों के सामने नशा करना एक निजी निर्णय है या सामाजिक संदेश?

क्या सामाजिक आयोजनों को नशामुक्त बनाया जा सकता है?

सोशल मीडिया युवाओं की नशे के प्रति धारणाओं को किस प्रकार प्रभावित करता है?

अध्याय 3 का सूत्र

> **"नशा व्यक्ति के हाथ में दिखाई देता है, लेकिन उसकी जड़ें अक्सर समाज के भीतर होती हैं।"**

4 अध्याय 4 : मनुहार, परंपरा और कुरीति

विवाह, शोक सभाएँ और सामाजिक आयोजनों में नशे की संस्कृति

प्रस्तावना

किसी भी समाज की पहचान केवल उसके कानूनों से नहीं, बल्कि उसकी परंपराओं और सामाजिक व्यवहारों से भी होती है।

हम अपने बच्चों को जो सिखाते हैं, वह केवल विद्यालयों में नहीं सिखाया जाता। बहुत कुछ सामाजिक आयोजनों में सीखा जाता है।

विवाहों में।

पारिवारिक समारोहों में।

सामुदायिक आयोजनों में।

शोक सभाओं में।

रिश्तेदारों और मित्रों के मेल-मिलाप में।

यहीं समाज अपने मूल्यों का सार्वजनिक प्रदर्शन करता है।

इसीलिए लोकसंकल्प एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाता है—

> **क्या हमारे सामाजिक आयोजन स्वस्थ जीवन मूल्यों को बढ़ावा दे रहे हैं या अनजाने में नशे की सामाजिक स्वीकृति को मजबूत कर रहे हैं?**

परंपरा क्या है?

परंपरा वह सामाजिक व्यवहार है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता है और समाज के सामूहिक जीवन को सकारात्मक दिशा देता है।

परंपराएँ समाज को जोड़ती हैं।

संस्कार देती हैं।

पहचान प्रदान करती हैं।

सामाजिक एकता को मजबूत करती हैं।

लेकिन हर पुराना व्यवहार परंपरा नहीं होता।

और हर परंपरा हमेशा उपयोगी बनी रहे, यह भी आवश्यक नहीं है।

समाज निरंतर बदलता है।

इसलिए परंपराओं की समीक्षा भी समय-समय पर आवश्यक होती है।

www.loksankalp.org

कुरीति क्या है?

जब कोई व्यवहार समाज के लिए हानिकारक हो, फिर भी केवल आदत, दबाव या परंपरा के नाम पर जारी रहे, तो वह कुरीति बन जाता है।

समाज सुधार का इतिहास बताता है कि अनेक कुरीतियाँ कभी सामान्य मानी जाती थीं।

समय के साथ समाज ने उन्हें पहचाना और बदला।

परिवर्तन का अर्थ संस्कृति को नष्ट करना नहीं होता।

परिवर्तन का अर्थ संस्कृति को अधिक मानवीय और कल्याणकारी बनाना होता है।

मनुहार का वास्तविक अर्थ

भारतीय संस्कृति में “मनुहार” का विशेष स्थान है।

मनुहार का अर्थ है—

- स्नेह
- सम्मान
- अपनापन
- आतिथ्य

मनुहार का उद्देश्य किसी व्यक्ति को सम्मानित महसूस कराना है।

लेकिन एक प्रश्न विचारणीय है—

> **यदि किसी पदार्थ का परिणाम बीमारी, व्यसन, आर्थिक नुकसान और पारिवारिक संकट हो सकता है, तो क्या उसे मनुहार कहा जा सकता है?**

सम्मान और नशा: एक सामाजिक भ्रम

कई क्षेत्रों में अतिथि के स्वागत के दौरान तंबाकू, गुटखा, बीड़ी, सिगरेट या अन्य नशीले पदार्थ प्रस्तुत किए जाते हैं।

समय के साथ यह व्यवहार इतना सामान्य हो गया कि लोगों ने उसे प्रश्नों के घेरे में रखना ही छोड़ दिया।

लेकिन यदि हम निष्पक्ष होकर विचार करें तो पाएँगे कि—

- भोजन सम्मान हो सकता है।

- पानी सम्मान हो सकता है।
- फल सम्मान हो सकते हैं।
- स्वस्थ संवाद सम्मान हो सकता है।

लेकिन ऐसा पदार्थ जो स्वास्थ्य को हानि पहुँचाता हो, सम्मान का माध्यम कैसे हो सकता है?

लोकसंकल्प इसी भ्रम को चुनौती देता है।

विवाह और नशे की सामाजिक स्वीकृति

विवाह केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो परिवारों का मिलन होता है।

यह भविष्य निर्माण का उत्सव है।

लेकिन जब विवाह समारोहों में नशे को प्रतिष्ठा, आधुनिकता या आतिथ्य का प्रतीक बना दिया जाता है, तब एक विरोधाभास उत्पन्न होता है।

एक ओर हम नई पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

दूसरी ओर उन्हीं के सामने नशे को सामान्य व्यवहार के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

यह विरोधाभास जितना दिखाई देता है, उससे कहीं अधिक गहरा है।

क्योंकि बच्चे केवल देखते नहीं, सीखते भी हैं।

www.loksankalp.org

बच्चे क्या सीखते हैं?

कल्पना कीजिए—

एक किशोर अपने परिवार के साथ किसी सामाजिक आयोजन में गया है।

वह देखता है कि सम्मानित लोग नशे का सेवन कर रहे हैं।

लोग उसका विरोध नहीं कर रहे।

बल्कि कई बार उसे सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़ रहे हैं।

उसके मन में कौन-सा संदेश जाएगा?

संभवतः यह कि—

- “यह व्यवहार सामान्य है।”
- यही सामाजिक स्वीकृति की सबसे बड़ी शक्ति है।

शोक सभाएँ और सामाजिक आत्ममंथन

किसी व्यक्ति के निधन के बाद आयोजित शोक सभा, श्रद्धांजलि बैठक या स्मृति आयोजन जीवन के मूल्यों को याद करने का अवसर होता है।

यह अवसर हमें यह सोचने का अवसर देता है कि जीवन में वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है।

ऐसे अवसरों पर यदि नशे का प्रयोग या उसकी मनुहार की जाती है, तो यह आत्ममंथन का विषय है।

लोकसंकल्प किसी परिवार की आलोचना नहीं करता।

वह केवल यह प्रश्न पूछता है—

> **क्या हम शोक के अवसरों को स्वस्थ सामाजिक संदेश का माध्यम बना सकते हैं?**

क्या दिवंगत व्यक्ति की स्मृति में एक नशामुक्त आयोजन अधिक सार्थक नहीं होगा?

“लोग क्या कहेंगे?” का दबाव

कई परिवार स्वयं नशा परोसना नहीं चाहते।

फिर भी वे ऐसा करते हैं क्योंकि उन्हें लगता है—

- लोग क्या कहेंगे?
- रिश्तेदार नाराज़ हो जाएंगे।
- परंपरा टूट जाएगी।
- हमारी प्रतिष्ठा कम हो जाएगी।

समाजशास्त्र में इसे "सामाजिक दबाव" कहा जाता है।

कई बार लोग वह नहीं करते जो सही लगता है।

वे वह करते हैं जो उन्हें लगता है कि समाज उनसे अपेक्षा करता है।

इसीलिए सामाजिक परिवर्तन केवल व्यक्तिगत निर्णय से नहीं आता।

इसके लिए सामूहिक संकल्प आवश्यक होता है।

नई सामाजिक परंपरा की आवश्यकता

लोकसंकल्प का उद्देश्य पुरानी परंपराओं को नष्ट करना नहीं है।

उद्देश्य है—

हानिकारक व्यवहारों को हटाकर स्वस्थ परंपराओं को मजबूत करना।

कल्पना कीजिए—

यदि किसी गांव में यह नई परंपरा विकसित हो जाए कि—

- विवाह नशामुक्त होंगे।
- शोक सभाएँ नशामुक्त होंगी।
- सामाजिक आयोजनों में तंबाकू नहीं परोसा जाएगा।
- बच्चों के सामने नशे का प्रदर्शन नहीं होगा।

तो कुछ वर्षों में सामाजिक वातावरण कितना बदल सकता है।

लोकसंकल्प का सामाजिक संदेश

लोकसंकल्प यह नहीं कहता—

- "नशा करने वाले व्यक्ति का बहिष्कार करो।"
- लोकसंकल्प कहता है—
- "नशे की सामाजिक प्रतिष्ठा का बहिष्कार करो।"
- व्यक्ति को सहयोग दो।
- परिवार को समर्थन दो।
- उपचार को प्रोत्साहन दो।
- लेकिन नशे को सम्मान देना बंद करो।
- लोकसंकल्प परिवार संकल्प
- हम संकल्प लेते हैं कि—

- ✔ अपने किसी भी सामाजिक, पारिवारिक या सामुदायिक आयोजन में नशीले पदार्थों की मनुहार नहीं करेंगे।
- ✔ तंबाकू, गुटखा, बीड़ी, सिगरेट, शराब या अन्य नशीले पदार्थों को सम्मान अथवा आतिथ्य का प्रतीक नहीं मानेंगे।
- ✔ बच्चों और युवाओं के सामने स्वस्थ व्यवहार का उदाहरण प्रस्तुत करेंगे।
- ✔ अपने परिवार और समाज में नशामुक्त आयोजनों की नई परंपरा विकसित करेंगे।

प्रेरक विचार

> **"अतिथि का सम्मान भोजन से हो सकता है, स्नेह से हो सकता है, संस्कारों से हो सकता है; नशे से नहीं।"**

> **"परंपरा वह है जो समाज को ऊपर उठाए, जो नीचे गिराए वह कुरीति है।"**

अध्याय 4 का सूत्र

> **"नशे की सामाजिक स्वीकृति का सबसे बड़ा मंच सामाजिक आयोजन हैं; इसलिए परिवर्तन की शुरुआत भी यहीं से होगी।"**

www.loksankalp.org

5 अध्याय 5 : युवा नशे की ओर क्यों बढ़ते हैं?

बेरोजगारी, अवसरों की कमी, सोशल मीडिया, मानसिक तनाव और बदलता समाज

प्रस्तावना

जब भी किसी युवा के नशे की गिरफ्त में आने की चर्चा होती है, तो अक्सर कहा जाता है—

- "उसकी संगति खराब थी।"
- "उसमें इच्छाशक्ति की कमी थी।"
- "वह गलत रास्ते पर चला गया।"

इन कारणों में आंशिक सत्य हो सकता है, लेकिन पूरी सच्चाई नहीं।

लोकसंकल्प का मानना है कि किसी भी सामाजिक समस्या को केवल व्यक्ति की कमजोरी के रूप में नहीं देखा जा सकता।

समाजशास्त्र हमें सिखाता है कि व्यक्ति का व्यवहार उसके सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक वातावरण से गहराई से प्रभावित होता है।

इसलिए यदि हम समझना चाहते हैं कि युवा नशे की ओर क्यों बढ़ते हैं, तो हमें केवल व्यक्ति को नहीं, बल्कि उसके आसपास की परिस्थितियों को भी समझना होगा।

www.loksankalp.org

नशा कारण नहीं, कई बार लक्षण होता है

लोकसंकल्प एक महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत करता है—

कई बार नशा समस्या नहीं, बल्कि किसी गहरी सामाजिक समस्या का लक्षण होता है।

जब युवा के जीवन में उद्देश्य, अवसर, जुड़ाव और आशा कमजोर होने लगते हैं, तब जोखिमपूर्ण व्यवहारों की संभावना बढ़ जाती है।

अनुसंधान बताते हैं कि परिवार से जुड़ाव, विद्यालय से जुड़ाव, सकारात्मक मित्र समूह और समुदाय का सहयोग युवाओं को नशे से दूर रखने वाले प्रमुख सुरक्षात्मक कारक (Protective Factors) हैं।

1 अवसरों की कमी और उद्देश्यहीनता

हर युवा अपने जीवन में आगे बढ़ना चाहता है।

वह सम्मान चाहता है।

पहचान चाहता है।

उपलब्धि चाहता है।

लेकिन जब उसे लगता है कि उसके सामने अवसर सीमित हैं, तब निराशा जन्म लेने लगती है।

विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक युवाओं को यह महसूस होता है कि—

- अच्छी शिक्षा तक पहुँच सीमित है।
- कौशल विकास के अवसर कम हैं।
- रोजगार के अवसर पर्याप्त नहीं हैं।
- प्रतियोगिता बढ़ती जा रही है।

ऐसी परिस्थितियों में कुछ युवा सकारात्मक रास्ते चुनते हैं, जबकि कुछ तनाव और निराशा से बचने के लिए नशे की ओर आकर्षित हो सकते हैं।

2 बेरोजगारी और सामाजिक हताशा

बेरोजगारी केवल आर्थिक समस्या नहीं है।

यह सामाजिक और मनोवैज्ञानिक समस्या भी है।

जब किसी युवा को बार-बार असफलता मिलती है, तो उसके आत्मविश्वास पर प्रभाव पड़ता है।

धीरे-धीरे उसके भीतर यह भावना विकसित हो सकती है कि—

> **“मेरे प्रयासों का कोई अर्थ नहीं है।”**

समाजशास्त्री इसे “सामाजिक हताशा” (Social Frustration) की स्थिति मानते हैं।

यदि ऐसे समय में परिवार, समुदाय और सकारात्मक मार्गदर्शन उपलब्ध न हो, तो जोखिमपूर्ण व्यवहारों की संभावना बढ़ सकती है।

3 कृषि और ग्रामीण युवाओं की बदलती आकांक्षाएँ

भारत का ग्रामीण समाज तेजी से बदल रहा है।

नई पीढ़ी केवल पारंपरिक आजीविका तक सीमित नहीं रहना चाहती।

वह नई तकनीक, उद्यमिता, डिजिटल अवसरों और आधुनिक जीवन की आकांक्षा रखती है।

लेकिन कई बार आकांक्षाओं और उपलब्ध अवसरों के बीच दूरी पैदा हो जाती है।

यही दूरी असंतोष और तनाव का कारण बन सकती है।

इसलिए लोकसंकल्प का मानना है कि नशामुक्ति केवल “नशा छोड़ो” अभियान नहीं हो सकती।

यह युवाओं को अवसरों, कौशल, उद्यमिता और सकारात्मक जीवन विकल्पों से जोड़ने का अभियान भी होना चाहिए।

www.loksankalp.org

4 सोशल मीडिया का टॉक्सिक प्रभाव

डिजिटल युग ने नई संभावनाएँ दी हैं।

लेकिन नई चुनौतियाँ भी दी हैं।

आज का युवा प्रतिदिन घंटों सोशल मीडिया पर बिताता है।

वहाँ उसे दिखाई देता है—

विलासिता | त्वरित सफलता | कृत्रिम लोकप्रियता | दिखावटी जीवन शैली

धीरे-धीरे वास्तविक जीवन और डिजिटल जीवन के बीच तुलना शुरू हो जाती है।

कई युवा स्वयं को असफल समझने लगते हैं।

तुलना का जाल

सोशल मीडिया का सबसे बड़ा खतरा कई बार सूचना नहीं, तुलना होती है।

जब व्यक्ति लगातार दूसरों की सफलता देखता है और अपनी चुनौतियों से उसकी तुलना करता है, तो तनाव और असंतोष बढ़ सकते हैं।

ऐसी परिस्थितियों में कुछ लोग पलायन के साधन खोजने लगते हैं।

नशा कई बार उसी पलायन का माध्यम बन जाता है।

5 मानसिक तनाव और अकेलापन

लोकसंकल्प का एक महत्वपूर्ण संदेश है—

हर नशा करने वाला व्यक्ति अपराधी नहीं होता; कई बार वह संघर्षरत व्यक्ति होता है।

कुछ युवा—

- चिंता से जूझ रहे होते हैं,
- असफलता से परेशान होते हैं,
- पारिवारिक तनाव झेल रहे होते हैं,
- अकेलापन महसूस कर रहे होते हैं।

यदि उन्हें समय पर संवाद, सहयोग और परामर्श न मिले, तो वे गलत रास्तों की ओर बढ़ सकते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन भी मानता है कि किशोरों के स्वस्थ विकास के लिए सुरक्षित वातावरण, जीवन कौशल, सामाजिक समर्थन और मानसिक स्वास्थ्य सहयोग अत्यंत आवश्यक हैं।

6 परिवार से कमजोर होता जुड़ाव

अनुसंधान लगातार बताते हैं कि परिवार से मजबूत जुड़ाव युवाओं को नशे से दूर रखने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है।

जब परिवार में—

- संवाद कम हो,
- निगरानी कम हो,
- भावनात्मक दूरी बढ़ जाए,
- साथ बिताया जाने वाला समय घट जाए,
- तो जोखिम बढ़ सकता है।

इसलिए लोकसंकल्प केवल नशामुक्ति नहीं, बल्कि परिवार सशक्तीकरण की भी बात करता है।

7 विद्यालय से दूरी

विद्यालय केवल शिक्षा का केंद्र नहीं है।

यह सामाजिक सुरक्षा का भी केंद्र है।

अनुसंधान बताते हैं कि जो विद्यार्थी विद्यालय से जुड़ाव महसूस करते हैं, उनमें नशे और अन्य जोखिमपूर्ण व्यवहारों की संभावना कम होती है।

इसलिए—

- प्रेरक शिक्षक,
- सहायक विद्यालय वातावरण,
- खेल,
- सांस्कृतिक गतिविधियाँ,
- छात्र नेतृत्व कार्यक्रम
- नशामुक्ति के भी महत्वपूर्ण साधन हैं।

www.loksankalp.org

8 सिंथेटिक ड्रग्स और संगठित तस्करी

आज की चुनौती केवल पारंपरिक नशों तक सीमित नहीं है।

सिंथेटिक ड्रग्स, अवैध दवाओं का दुरुपयोग और संगठित तस्करी का नेटवर्क नई चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रहा है।

इनका उद्देश्य केवल नशा बेचना नहीं होता।

यह युवाओं को एक ऐसे चक्र में फँसा देता है जिससे बाहर निकलना कठिन हो सकता है।

इसलिए समाज की सजगता अत्यंत आवश्यक है।

लोकसंकल्प वेबसाइट पर उपलब्ध गोपनीय सूचना तंत्र इसी सामाजिक जिम्मेदारी को मजबूत करने का प्रयास है।

समाधान क्या है?

यदि कारण बहुआयामी हैं तो समाधान भी बहुआयामी होने चाहिए।

लोकसंकल्प का युवा सशक्तीकरण मॉडल

1 संवाद

हर युवा को सुना जाए।

2 कौशल

रोजगार और उद्यमिता से जुड़ाव।

3 खेल

ऊर्जा को सकारात्मक दिशा।

4 स्वयंसेवा

समाज के लिए काम करने के अवसर।

5 नेतृत्व

युवाओं को परिवर्तन दूत बनाना।

6 परिवार

मजबूत पारिवारिक संबंध।

7 विद्यालय

सुरक्षित और सहयोगी वातावरण।

8 समुदाय

सकारात्मक सामाजिक नेटवर्क।

ये सभी तत्व युवाओं को नशे से दूर रखने वाले सुरक्षात्मक कारक माने जाते हैं।

www.loksankalp.org

अध्याय 5 का निष्कर्ष

नशा केवल पदार्थ का प्रश्न नहीं है।

यह आशा और निराशा का भी प्रश्न है।

यह अवसर और वंचना का भी प्रश्न है।

यह जुड़ाव और अलगाव का भी प्रश्न है।

इसलिए यदि हम युवाओं को नशे से दूर रखना चाहते हैं, तो हमें केवल नशे का विरोध नहीं करना होगा।

हमें युवाओं के लिए बेहतर अवसर, बेहतर संवाद, बेहतर शिक्षा, बेहतर कौशल और बेहतर भविष्य भी निर्मित करना होगा।

चिंतन प्रश्न

आपके क्षेत्र के युवा किन प्रमुख चुनौतियों का सामना कर रहे हैं?

क्या बेरोजगारी और नशे के बीच कोई संबंध दिखाई देता है?

सोशल मीडिया युवाओं की आकांक्षाओं और तनाव को कैसे प्रभावित करता है?

आपके गांव में युवाओं के लिए सकारात्मक विकल्प कौन-कौन से उपलब्ध हैं?

अध्याय 5 का सूत्र

> **"जब युवाओं को उद्देश्य, अवसर और जुड़ाव मिलता है, तब नशे की जगह आशा ले लेती है।"**

6 अध्याय 6 : समाधान की ओर

परिवार, विद्यालय और समुदाय की साझा भूमिका

प्रस्तावना

किसी भी सामाजिक समस्या का समाधान केवल कानूनों, अभियानों या नारों से नहीं होता।

स्थायी परिवर्तन तब आता है जब समाज स्वयं परिवर्तन का भागीदार बनता है।

नशे की समस्या भी ऐसी ही चुनौती है।

यदि एक व्यक्ति नशा छोड़ता है लेकिन उसका सामाजिक वातावरण वैसा ही बना रहता है, तो उसके दोबारा नशे की ओर लौटने की संभावना बनी रहती है।

इसके विपरीत यदि परिवार, विद्यालय, समुदाय और स्थानीय नेतृत्व मिलकर सकारात्मक वातावरण बनाते हैं, तो नशामुक्त जीवन अपनाना आसान हो जाता है।

इसीलिए लोकसंकल्प केवल जागरूकता अभियान नहीं है।

यह सामाजिक वातावरण परिवर्तन (Social Environment Change) का अभियान है।

समस्या व्यक्ति में नहीं, वातावरण में भी होती है

अक्सर हम पूछते हैं—

- "युवा नशा क्यों कर रहा है?"
- लेकिन लोकसंकल्प एक दूसरा प्रश्न भी पूछता है—

"क्या हम ऐसा वातावरण बना रहे हैं जिसमें युवा नशे से दूर रह सके?"

यदि किसी गांव में—

- खेल के अवसर नहीं हैं,
- सकारात्मक गतिविधियाँ नहीं हैं,
- परिवार में संवाद नहीं है,
- विद्यालय में प्रेरणा नहीं है,
- समाज में नशे को सामान्य माना जाता है,
- तो केवल व्यक्ति को दोष देना पर्याप्त नहीं है।
- हमें वातावरण को भी बदलना होगा।
- पहला स्तंभ : परिवार

www.loksankalp.org

परिवार क्यों महत्वपूर्ण है?

परिवार वह स्थान है जहाँ बच्चा पहली बार सीखता है—

सही क्या है? | **गलत क्या है?** | **सम्मान क्या है?** | **जिम्मेदारी क्या है?**

इसीलिए परिवार नशामुक्ति की पहली और सबसे प्रभावी संस्था है।

नशामुक्त परिवार की पाँच पहचान

1 संवाद

परिवार में खुलकर बातचीत होती हो।

2 समय

बच्चों के साथ नियमित समय बिताया जाता हो।

3 विश्वास

बच्चे अपनी समस्याएँ साझा कर सकें।

4 अनुशासन

स्पष्ट लेकिन सकारात्मक सीमाएँ हों।

5 उदाहरण

बड़े वही आचरण करें जिसकी अपेक्षा बच्चों से करते हैं।

Good Parenting और लोकसंकल्प

लोकसंकल्प का मानना है कि अच्छी परवरिश नशामुक्त समाज की सबसे मजबूत नींव है।

पाँच स्वर्णिम सूत्र

सुनिए

बच्चे को बिना टोके सुनिए।

समझिए

उसकी भावनाओं को समझिए।

समय दीजिए

उपस्थित रहना सबसे बड़ा उपहार है।

विश्वास कीजिए

हर समय संदेह नहीं, सहयोग दीजिए।

उदाहरण बनिए

बच्चे उपदेश से नहीं, उदाहरण से सीखते हैं।

www.loksankalp.org

दूसरा स्तंभ : विद्यालय

विद्यालय क्यों महत्वपूर्ण है?

विद्यालय केवल पाठ्यक्रम नहीं पढ़ाता।

वह जीवन भी सिखाता है।

अनेक बच्चों के लिए विद्यालय ही वह स्थान होता है जहाँ उन्हें प्रेरणा, दिशा और पहचान मिलती है।

शिक्षक की भूमिका

लोकसंकल्प में शिक्षक केवल शिक्षक नहीं हैं।

वे—

प्रेरक | मार्गदर्शक | सामाजिक नेता | परिवर्तन दूत | हैं।

एक शिक्षक क्या कर सकता है?

विद्यार्थियों से संवाद

नशे पर खुली चर्चा।

जीवन कौशल शिक्षा

निर्णय क्षमता, आत्मविश्वास और नेतृत्व।

खेल और गतिविधियाँ

सकारात्मक ऊर्जा का विकास।

अभिभावक बैठकें

परिवारों को अभियान से जोड़ना।

ग्राम संवाद

विद्यालय को समुदाय से जोड़ना।

तीसरा स्तंभ : समुदाय

समुदाय क्यों महत्वपूर्ण है?

व्यक्ति का व्यवहार केवल घर और विद्यालय से नहीं बनता।

उस पर पूरे समुदाय का प्रभाव पड़ता है।

यदि गांव में नशा सामान्य माना जाता है, तो परिवर्तन कठिन होगा।

यदि गांव नशामुक्त वातावरण बनाता है, तो परिवर्तन आसान होगा।

ग्राम लोकसंकल्प सभा

लोकसंकल्प का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक उपकरण है—

- ग्राम लोकसंकल्प सभा
- यह केवल एक बैठक नहीं है।
- यह सामूहिक सामाजिक आत्ममंथन का मंच है।
- जहाँ लोग मिलकर चर्चा करते हैं—
- हमारी समस्याएँ क्या हैं?

हमारे युवाओं के सामने क्या चुनौतियाँ हैं?

हम क्या बदल सकते हैं?

ग्राम लोकसंकल्प समिति

प्रत्येक ग्राम सभा के बाद एक समिति बनाई जा सकती है।

संभावित सदस्य—

शिक्षक · विद्यार्थी प्रतिनिधि · महिला प्रतिनिधि · युवा प्रतिनिधि · पंचायत प्रतिनिधि · आंगनवाड़ी कार्यकर्ता · सामाजिक कार्यकर्ता · समिति की जिम्मेदारियाँ

- ✔ मासिक बैठक
- ✔ जनजागरण गतिविधियाँ
- ✔ नशामुक्ति संवाद
- ✔ युवा गतिविधियाँ
- ✔ परिवार परामर्श
- ✔ सफलता कहानियों का संकलन
- ✔ लोकसंकल्प वेबसाइट पर गतिविधियों का दस्तावेजीकरण

चौथा स्तंभ : युवाओं की भागीदारी

युवाओं को समस्या नहीं, समाधान का हिस्सा बनाना होगा।

युवा क्या कर सकते हैं?

खेल क्लब

पुस्तक क्लब

पर्यावरण गतिविधियाँ

कौशल प्रशिक्षण

डिजिटल साक्षरता अभियान

नशामुक्ति स्वयंसेवा

युवा परिवर्तन दूत

लोकसंकल्प का विश्वास है—

www.loksankalp.org

"जिस युवा को समाज पर विश्वास मिलता है, वह समाज की शक्ति बनता है।"

पाँचवाँ स्तंभ : महिलाओं का नेतृत्व

परिवार और समुदाय दोनों में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

महिलाएँ—

- बच्चों की पहली शिक्षक होती हैं।
- परिवार की सांस्कृतिक धुरी होती हैं।
- सामाजिक परिवर्तन की मजबूत वाहक होती हैं।

महिला नेतृत्व से क्या संभव है?

- ✔ नशामुक्त परिवार
- ✔ स्वस्थ परवरिश
- ✔ सामुदायिक संवाद
- ✔ सामाजिक कुरीतियों को चुनौती
- ✔ नई सकारात्मक परंपराओं का निर्माण

www.loksankalp.org

छठा स्तंभ : धार्मिक और सामाजिक नेतृत्व

समाज के अनेक लोग धार्मिक और सामाजिक नेतृत्व पर विश्वास करते हैं।

यदि धार्मिक मंचों से—

स्वास्थ्य, **संयम,** **जिम्मेदारी,** **नशामुक्त जीवन**

का संदेश दिया जाए, तो उसका व्यापक प्रभाव हो सकता है।

लोकसंकल्प का परिवर्तन मॉडल

व्यक्ति

↓

परिवार

↓

विद्यालय

↓

समुदाय

↓

सामाजिक मानदंड

↓

नशामुक्त समाज

परिवर्तन का सिद्धांत

लोकसंकल्प का मूल सिद्धांत सरल है—

हम केवल नशा छोड़ने की बात नहीं करेंगे।

हम ऐसा वातावरण बनाएँगे जिसमें नशा शुरू ही न हो।

हम केवल समस्या पर नहीं, समाधान पर ध्यान देंगे।

हम केवल व्यक्तियों को नहीं, पूरे समाज को जोड़ेंगे।

प्रेरक उदाहरण

यदि किसी गांव में—

- विद्यालय सक्रिय हो,
- शिक्षक प्रेरित हों,
- ग्राम समिति कार्य कर रही हो,
- परिवार संवाद कर रहे हों,
- युवा खेल और सेवा गतिविधियों से जुड़े हों,
- तो वह गांव केवल नशामुक्त नहीं बनता।

वह सामाजिक रूप से अधिक मजबूत, सुरक्षित और आत्मविश्वासी भी बनता है।

अध्याय 6 का निष्कर्ष

नशे के विरुद्ध सबसे प्रभावी हथियार केवल कानून नहीं है।

सबसे प्रभावी हथियार है—

- जागरूक परिवार,
- सक्रिय विद्यालय,
- संगठित समुदाय,
- प्रेरित युवा,
- जिम्मेदार नेतृत्व।
- यही लोकसंकल्प का मार्ग है।
- चिंतन प्रश्न

www.loksankalp.org

आपके गांव में परिवार, विद्यालय और समुदाय के बीच सहयोग कितना है?

क्या आपके गांव में लोकसंकल्प समिति बनाई जा सकती है?

युवाओं को सकारात्मक गतिविधियों से जोड़ने के लिए कौन-कौन से अवसर विकसित किए जा सकते हैं?

आपके क्षेत्र में सामाजिक नेतृत्व की क्या भूमिका हो सकती है?

अध्याय 6 का सूत्र

> **“जब परिवार दिशा देता है, विद्यालय प्रेरणा देता है और समुदाय सहयोग देता है, तब नशामुक्त समाज की नींव मजबूत होती है।”**

7 अध्याय 7 : लोकसंकल्प का कार्यमॉडल

ग्राम सभा से सामाजिक परिवर्तन तक

प्रस्तावना

किसी भी सामाजिक आंदोलन की सफलता केवल उसके विचारों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि वह व्यवहार में कैसे लागू होता है।

अनेक अभियान इसलिए प्रभावी नहीं हो पाते क्योंकि वे केवल जागरूकता तक सीमित रह जाते हैं।

लोग सुनते हैं।

सहमति भी व्यक्त करते हैं।

लेकिन व्यवहार नहीं बदलता।

लोकसंकल्प का उद्देश्य केवल जागरूकता पैदा करना नहीं है।

इसका उद्देश्य है—

सामाजिक स्वीकृति को चुनौती देना, सामूहिक संकल्प विकसित करना और व्यवहार परिवर्तन को सामाजिक आंदोलन का स्वरूप देना।

इसीलिए लोकसंकल्प का कार्यमॉडल संवाद से शुरू होकर सामाजिक परिवर्तन तक पहुँचता है।

लोकसंकल्प का परिवर्तन चक्र

लोकसंकल्प का मॉडल छह चरणों पर आधारित है—

1. **जागरूकता**
2. **संवाद**
3. **संकल्प**
4. **संगठन**
5. **व्यवहार परिवर्तन**
6. **सामाजिक मानदंड परिवर्तन**

चरण 1 : जागरूकता

परिवर्तन की शुरुआत जानकारी से होती है।

जब तक समाज यह नहीं समझेगा कि नशे की सामाजिक स्वीकृति भी समस्या का हिस्सा है, तब तक परिवर्तन संभव नहीं होगा।

इस चरण में—

ग्राम सभाएँ | विद्यालय कार्यक्रम | जनसंवाद | पोस्टर | वीडियो | सोशल मीडिया सामग्री | का उपयोग किया जाएगा। | चरण 2 : संवाद

लोकसंकल्प किसी पर विचार थोपने का अभियान नहीं है।

यह संवाद का अभियान है।

इसलिए प्रत्येक ग्राम सभा में लोगों को बोलने का अवसर दिया जाएगा।

प्रमुख प्रश्न—

> **हमारे गांव में नशे की स्थिति क्या है?**

युवा किन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं?

क्या सामाजिक आयोजनों में नशे की मनुहार होती है?

हम क्या बदल सकते हैं?

जब लोग स्वयं समाधान खोजते हैं, तब परिवर्तन अधिक स्थायी होता है।

चरण 3 : संकल्प

संवाद के बाद सामूहिक संकल्प।

क्योंकि बिना प्रतिबद्धता के परिवर्तन अधूरा रहता है।

लोकसंकल्प का विश्वास है—

"व्यक्ति का संकल्प, समाज का भविष्य बदल सकता है।"

ग्राम संकल्प

ग्राम सभा में उपस्थित लोग संकल्प लें कि—

- ✔ नशे को सामाजिक सम्मान नहीं देंगे।
- ✔ नशा छोड़ने वालों का सहयोग करेंगे।

- ✔ सामाजिक आयोजनों में नशे की मनुहार नहीं करेंगे।
- ✔ बच्चों के सामने नशा नहीं करेंगे।
- ✔ युवाओं के लिए सकारात्मक अवसर विकसित करेंगे।

चरण 4 : संगठन

संकल्प के बाद संगठन आवश्यक है।

इसीलिए प्रत्येक ग्राम सभा के बाद—

लोकसंकल्प ग्राम समिति | **का गठन किया जाएगा।** | **ग्राम समिति क्यों?**

अधिकांश अभियान कार्यक्रम समाप्त होने के बाद समाप्त हो जाते हैं।

लोकसंकल्प ऐसा नहीं चाहता।

ग्राम समिति सुनिश्चित करेगी कि—

- संवाद जारी रहे।
- संकल्प जीवित रहे।
- गतिविधियाँ नियमित चलती रहें।
- समिति की संभावित संरचना
- संरक्षक

www.loksankalp.org

प्रधानाचार्य / वरिष्ठ शिक्षक

सदस्य

शिक्षक प्रतिनिधि

महिला प्रतिनिधि

युवा प्रतिनिधि

विद्यार्थी प्रतिनिधि

पंचायत प्रतिनिधि

सामाजिक कार्यकर्ता

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता

समिति की मासिक बैठक

प्रत्येक माह कम से कम एक बैठक आयोजित की जाए।

बैठक में चर्चा हो—

गांव की वर्तमान स्थिति | **नई गतिविधियाँ**

नशा छोड़ने के इच्छुक व्यक्तियों की सहायता

आगामी कार्यक्रम

सफलता कथाएँ

चरण 5 : व्यवहार परिवर्तन

लोकसंकल्प की वास्तविक सफलता यहीं से शुरू होती है।

क्योंकि पोस्टर बदलने से समाज नहीं बदलता।

व्यवहार बदलने से समाज बदलता है।

व्यवहार परिवर्तन के संकेत

यदि गांव में—

- ✔ तंबाकू की मनुहार कम होने लगे
- ✔ विवाह नशामुक्त होने लगें
- ✔ शोक सभाएँ नशामुक्त होने लगें
- ✔ बच्चे खुलकर नशे के विरोध में बोलने लगें
- ✔ परिवार संवाद बढ़ाएँ

तो समझना चाहिए कि परिवर्तन शुरू हो चुका है।

लोकसंकल्प वेबसाइट की भूमिका

loksankalp.org

लोकसंकल्प का डिजिटल मंच केवल सूचना देने के लिए नहीं है।

यह आंदोलन का दस्तावेजीकरण और नेटवर्किंग प्लेटफ़ॉर्म है।

www.loksankalp.org

वेबसाइट पर क्या किया जा सकेगा?

1 ग्राम संकल्प पंजीकरण

गांव और संस्थाएँ जुड़ सकेंगी।

2 गतिविधि रिपोर्ट

सभा और कार्यक्रमों की जानकारी अपलोड की जा सकेगी।

3 सफलता कथाएँ

प्रेरक अनुभव साझा किए जा सकेंगे।

4 संसाधन केंद्र

शिक्षकों, युवाओं, अभिभावकों और ग्राम समितियों के लिए सामग्री उपलब्ध होगी।

5 गोपनीय सहायता एवं सूचना

नशे से संबंधित सहायता और जानकारी साझा की जा सकेगी।

6 प्रेरक मॉडल

देशभर की अच्छी पहलें साझा की जाएँगी।

सफलता कहानी (Success Story) मॉडल

लोकसंकल्प केवल कार्यक्रमों की संख्या नहीं गिनेगा।

वह परिवर्तन की कहानियाँ खोजेगा।

सफलता कहानी क्या हो सकती है?

उदाहरण 1

एक परिवार जिसने विवाह में नशा परोसने की परंपरा छोड़ी।

उदाहरण 2

एक युवा जिसने नशा छोड़कर नया जीवन शुरू किया।

उदाहरण 3

एक गांव जिसने सामूहिक संकल्प लिया।

उदाहरण 4

एक विद्यालय जिसने नशामुक्ति क्लब बनाया।

सत्यापन आधारित प्रेरणा मॉडल

लोकसंकल्प केवल दावे नहीं, उदाहरण प्रस्तुत करना चाहता है।

यदि किसी परिवार ने संकल्प लिया कि—

“हम अपने सामाजिक आयोजनों में नशा नहीं परोसेंगे”

तो भविष्य में उनके आयोजन पर ग्राम समिति का प्रतिनिधि जा सकता है।

परिवार की सहमति से—

- छोटा वीडियो
- अनुभव
- फोटो
- वेबसाइट पर साझा किए जा सकते हैं।
- क्यों?

क्योंकि समाज उदाहरणों से अधिक सीखता है, भाषणों से कम।

www.loksankalp.org

चरण 6 : सामाजिक मानदंड परिवर्तन

यह लोकसंकल्प का अंतिम लक्ष्य है।

जब समाज यह कहने लगे—

- “नशा सामान्य नहीं है”
- तब सामाजिक मानदंड बदलना शुरू हो जाता है।
- सफलता कब मानी जाएगी?
- जब—

✔ नशा सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक न रहे।
✔ नशामुक्त आयोजन सम्मान की बात बन जाएँ।
✔ युवा नशे को नहीं, कौशल और उपलब्धि को आधुनिकता मानें।
✔ परिवार नशे के बजाय संवाद को महत्व दें।
✔ समाज नशा छोड़ने वालों को सम्मान दे।

लोकसंकल्प का विशिष्ट मॉडल

भारत में अधिकांश नशामुक्ति कार्यक्रम पूछते हैं—

> **“नशा करने वाले व्यक्ति को कैसे बदला जाए?”**

लोकसंकल्प पूछता है—

> **“समाज को कैसे बदला जाए ताकि नशा शुरू ही न हो?”**

यही इसकी विशिष्टता है।

अध्याय 7 का निष्कर्ष

लोकसंकल्प केवल एक अभियान नहीं है।

यह सामाजिक व्यवहार परिवर्तन का एक मॉडल है।

यह व्यक्ति से परिवार तक,

परिवार से समुदाय तक,

और समुदाय से सामाजिक संस्कृति तक परिवर्तन की यात्रा है।

चिंतन प्रश्न

1. आपके गांव में लोकसंकल्प समिति कैसे बनाई जा सकती है?
2. क्या आपके क्षेत्र में नशामुक्त सामाजिक आयोजन शुरू किए जा सकते हैं?
3. कौन-सी सफलता कहानियाँ दूसरों को प्रेरित कर सकती हैं?
4. loksankalp.org को गांव स्तर के आंदोलन से कैसे जोड़ा जा सकता है?

अध्याय 7 का सूत्र

> **"सामाजिक परिवर्तन तब शुरू होता है जब संकल्प केवल शब्द नहीं रहता, बल्कि सामूहिक व्यवहार बन जाता है।"**

www.loksankalp.org

8 अध्याय 8 : शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक

नशामुक्त समाज की त्रिवेणी

प्रस्तावना

किसी भी समाज का भविष्य उसके बच्चों और युवाओं में निहित होता है।

और बच्चों का भविष्य तीन प्रमुख संस्थाओं से निर्मित होता है—

- परिवार, विद्यालय और समुदाय।
- इन तीनों के बीच सबसे महत्वपूर्ण सेतु हैं—
- शिक्षक
- विद्यार्थी
- अभिभावक

यदि ये तीनों मिलकर काम करें तो समाज की सबसे कठिन समस्याओं का भी समाधान संभव है।

लोकसंकल्प का विश्वास है कि नशामुक्त समाज का निर्माण केवल कानूनों और अभियानों से नहीं होगा।

यह तब संभव होगा जब शिक्षक प्रेरणा देंगे, विद्यार्थी नेतृत्व करेंगे और अभिभावक सकारात्मक वातावरण का निर्माण करेंगे।

इसीलिए लोकसंकल्प इन्हें नशामुक्त समाज की "त्रिवेणी" मानता है।

शिक्षक क्यों महत्वपूर्ण हैं?

भारत में शिक्षक को केवल विषय विशेषज्ञ नहीं माना गया।

उन्हें समाज निर्माता माना गया है।

एक शिक्षक—

- ज्ञान देता है।
- दृष्टि देता है।
- चरित्र निर्माण करता है।
- सामाजिक मूल्यों का संचार करता है।

इसलिए जब शिक्षक नशामुक्त समाज की बात करते हैं तो उसका प्रभाव केवल विद्यार्थियों पर नहीं, पूरे समुदाय पर पड़ता है।

शिक्षक की बदलती भूमिका

आज शिक्षक की भूमिका कक्षा तक सीमित नहीं है।

उन्हें—

- शिक्षणकर्ता
- समुदाय नेता

- मार्गदर्शक
- परामर्शदाता
- सामाजिक परिवर्तनकर्ता
- की भूमिका भी निभानी पड़ती है।

लोकसंकल्प शिक्षक को इसी व्यापक भूमिका में देखता है।

शिक्षक दिवस और लोकसंकल्प

5 सितम्बर केवल सम्मान का दिन नहीं है।

यह समाज निर्माण का अवसर भी है।

इसीलिए लोकसंकल्प ने शिक्षक दिवस को ग्राम संकल्प सभाओं से जोड़ने का विचार प्रस्तुत किया है।

क्योंकि—

> **"यदि शिक्षक नेतृत्व करें तो नशामुक्ति केवल कार्यक्रम नहीं, सामाजिक आंदोलन बन सकती है।"**

शिक्षक क्या कर सकते हैं?

विद्यालय में

- ✔ नशामुक्ति संवाद
- ✔ जीवन कौशल गतिविधियाँ
- ✔ प्रेरक चर्चा
- ✔ छात्र नेतृत्व कार्यक्रम
- ✔ अभिभावक बैठकें

www.loksankalp.org

समुदाय में

- ✔ ग्राम संकल्प सभा
- ✔ युवा संवाद
- ✔ अभिभावक जागरूकता
- ✔ लोकसंकल्प समिति का मार्गदर्शन
- ✔ सफलता कहानियों का दस्तावेजीकरण

विद्यार्थी : परिवर्तन के दूत

इतिहास गवाह है कि बड़े सामाजिक परिवर्तन अक्सर युवाओं ने किए हैं।

स्वतंत्रता आंदोलन हो,

पर्यावरण आंदोलन हो,

साक्षरता अभियान हो,

युवाओं ने हमेशा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

विद्यार्थी क्यों महत्वपूर्ण हैं?

क्योंकि वे—

- ऊर्जा से भरपूर हैं।
- नए विचारों के लिए खुले हैं।

सामाजिक परिवर्तन को स्वीकार करने के लिए तैयार रहते हैं।

अपने परिवारों को प्रभावित कर सकते हैं।

लोकसंकल्प विद्यार्थी मॉडल

लोकसंकल्प विद्यार्थियों को केवल लाभार्थी नहीं मानता।

उन्हें परिवर्तन दूत मानता है।

विद्यार्थी क्या कर सकते हैं?

घर में

परिवार से संवाद

नशामुक्त वातावरण का आग्रह

विद्यालय में

नशामुक्ति क्लब

पोस्टर अभियान

वाद-विवाद

नुक्कड़ नाटक

गांव में

जनजागरण

ग्राम सभाओं में भागीदारी

वालंटियर कार्य

बाल नेतृत्व का महत्व

जब कोई बच्चा अपने घर में कहता है—

> **"पिताजी, कृपया मेरे सामने तंबाकू मत खाइए।"**

तो उसका प्रभाव किसी पोस्टर से कहीं अधिक होता है।

लोकसंकल्प ऐसे संवेदनशील और जिम्मेदार युवा नेतृत्व को विकसित करना चाहता है।

अभिभावक क्यों महत्वपूर्ण हैं?

एक बच्चा विद्यालय में कुछ घंटे बिताता है।

लेकिन उसका अधिकांश जीवन परिवार में बीतता है।

इसलिए नशामुक्त समाज की शुरुआत घर से होती है।

बच्चे क्या सीखते हैं?

बच्चे हमारे शब्दों से कम और व्यवहार से अधिक सीखते हैं।

यदि घर में—

- सम्मानपूर्वक संवाद होता है,
- नशे को बढ़ावा नहीं दिया जाता,
- स्वस्थ जीवन शैली अपनाई जाती है,
- तो बच्चे भी वही सीखते हैं।

अभिभावकों की पाँच जिम्मेदारियाँ

1 समय दें

बच्चों के साथ समय बिताएँ।

www.loksankalp.org

2 सुनें

उनकी बातें ध्यान से सुनें।

3 संवाद करें

नशे, सोशल मीडिया और जीवन की चुनौतियों पर खुलकर बात करें।

4 निगरानी रखें

मित्र मंडली और गतिविधियों पर सकारात्मक ध्यान दें।

5 उदाहरण बनें

जो मूल्य बच्चों में देखना चाहते हैं, उन्हें स्वयं अपनाएँ।

Good Parenting और लोकसंकल्प

लोकसंकल्प के अनुसार अच्छी परवरिश नशामुक्ति की सबसे मजबूत रणनीति है।

Good Parenting के पाँच सूत्र

समय

बच्चों को समय दें।

संवाद

खुलकर बात करें।

विश्वास

विश्वास का वातावरण बनाएं।

अनुशासन

स्पष्ट सीमाएँ निर्धारित करें।

उदाहरण

स्वयं आदर्श बनें।

परिवार और विद्यालय की साझेदारी

अक्सर परिवार और विद्यालय अलग-अलग काम करते हैं।

लोकसंकल्प उन्हें साझेदार बनाना चाहता है।

कैसे?

अभिभावक-शिक्षक संवाद

सामूहिक बैठकों का आयोजन

ग्राम संकल्प सभाएँ

साझा गतिविधियाँ

सकारात्मक कहानियों का प्रसार

लोकसंकल्प की त्रिवेणी

www.loksankalp.org

जब—

शिक्षक प्रेरित करें **विद्यार्थी नेतृत्व करें** **अभिभावक सहयोग करें**

तब सामाजिक परिवर्तन की गति कई गुना बढ़ जाती है।

एक आदर्श गांव की कल्पना

कल्पना कीजिए—

एक गांव जहाँ—

- ✔ शिक्षक सक्रिय हैं।
- ✔ विद्यार्थी जागरूक हैं।
- ✔ अभिभावक सहयोगी हैं।
- ✔ ग्राम समिति कार्यरत है।
- ✔ सामाजिक आयोजन नशामुक्त हैं।
- ✔ युवाओं के लिए अवसर उपलब्ध हैं।

ऐसा गांव केवल नशामुक्त नहीं होगा।

वह सामाजिक रूप से अधिक मजबूत, सुरक्षित और प्रगतिशील भी होगा।

www.loksankalp.org

लोकसंकल्प परिवार-विद्यालय घोषणा

हम मानते हैं कि—

- बच्चों का भविष्य हमारी साझा जिम्मेदारी है।
- नशामुक्त वातावरण उनका अधिकार है।

परिवार और विद्यालय मिलकर सकारात्मक समाज बना सकते हैं।

नशे की सामाजिक स्वीकृति समाप्त करना हमारा सामूहिक दायित्व है।

अध्याय 8 का निष्कर्ष

नशामुक्त समाज का निर्माण किसी एक संस्था द्वारा संभव नहीं है।

इसके लिए शिक्षक की प्रेरणा,

विद्यार्थी की ऊर्जा,

और अभिभावक का सहयोग

तीनों आवश्यक हैं।

यही त्रिवेणी लोकसंकल्प की सबसे बड़ी शक्ति है।

चिंतन प्रश्न

क्या आपके विद्यालय में नशामुक्ति क्लब बनाया जा सकता है?

अभिभावक-शिक्षक संवाद को कैसे मजबूत किया जा सकता है?

विद्यार्थी ग्राम स्तर पर क्या सकारात्मक भूमिका निभा सकते हैं?

आपके गांव में शिक्षक दिवस ग्राम संकल्प सभा का क्या प्रभाव हो सकता है?

अध्याय 8 का सूत्र

> **“जब शिक्षक दिशा देते हैं, विद्यार्थी ऊर्जा देते हैं और अभिभावक आधार देते हैं, तब नशामुक्त समाज का निर्माण संभव होता है।”**

9 अध्याय 9 : महिलाओं, ग्राम पंचायतों, धार्मिक नेताओं और सामाजिक संगठनों की भूमिका

सामुदायिक नेतृत्व से सामाजिक परिवर्तन तक

प्रस्तावना

कोई भी सामाजिक परिवर्तन केवल व्यक्तियों के प्रयासों से नहीं होता।

जब समाज की प्रमुख संस्थाएँ और नेतृत्व परिवर्तन का समर्थन करते हैं, तब नई सामाजिक संस्कृति का निर्माण होता है।

नशे की समस्या भी केवल स्वास्थ्य या कानून का विषय नहीं है।

यह सामाजिक मूल्यों, व्यवहारों और सामुदायिक वातावरण से जुड़ा प्रश्न है।

इसीलिए लोकसंकल्प का मानना है कि नशे की सामाजिक स्वीकृति को समाप्त करने के लिए समाज के सभी प्रभावशाली घटकों को सक्रिय भागीदारी निभानी होगी।

विशेष रूप से—

महिलाएँ | ग्राम पंचायतें

धार्मिक एवं आध्यात्मिक नेतृत्व

सामाजिक संगठन

स्वयंसेवी समूह

युवा संगठन

इस परिवर्तन यात्रा के महत्वपूर्ण साझेदार हैं।

महिलाएँ : परिवर्तन की सबसे बड़ी शक्ति

भारत के अधिकांश परिवारों में महिलाएँ केवल गृह प्रबंधन नहीं करतीं।

वे परिवार की संस्कृति, मूल्यों और सामाजिक व्यवहारों को भी प्रभावित करती हैं।

इसलिए यदि महिलाएँ नशामुक्ति के पक्ष में संगठित होती हैं तो सामाजिक परिवर्तन की गति कई गुना बढ़ सकती है।

महिलाएँ क्यों महत्वपूर्ण हैं?

क्योंकि वे—

- बच्चों की पहली शिक्षक हैं।
- परिवार की भावनात्मक धुरी हैं।
- सामाजिक व्यवहारों की संरक्षक हैं।

पीढ़ियों के बीच मूल्यों का हस्तांतरण करती हैं।

नशे का सबसे बड़ा प्रभाव महिलाओं पर

अक्सर नशा करने वाला व्यक्ति स्वयं को नुकसान पहुँचाता है, लेकिन उसके परिणाम पूरे परिवार को भुगतने पड़ते हैं।

विशेष रूप से महिलाएँ झेलती हैं—

आर्थिक असुरक्षा | घरेलू तनाव | हिंसा | बच्चों की उपेक्षा | सामाजिक असुरक्षा

इसीलिए महिलाओं की आवाज़ नशामुक्ति आंदोलन में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

महिलाएँ क्या कर सकती हैं?

परिवार में

- ✔ नशामुक्त वातावरण का आग्रह
- ✔ बच्चों में सकारात्मक संस्कार
- ✔ खुला संवाद

समुदाय में

- ✔ महिला बैठकों में चर्चा
- ✔ ग्राम संकल्प सभाओं में नेतृत्व
- ✔ नशामुक्त आयोजनों का समर्थन
- ✔ सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत करना

महिला नेतृत्व और सामाजिक कुरीतियाँ

इतिहास गवाह है कि अनेक सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

लोकसंकल्प का विश्वास है—

"नशे की सामाजिक स्वीकृति के विरुद्ध सबसे प्रभावशाली सामाजिक शक्ति महिलाओं का सामूहिक नेतृत्व हो सकता है।"

www.loksankalp.org

ग्राम पंचायतों की भूमिका

ग्राम पंचायत केवल प्रशासनिक संस्था नहीं है।

यह स्थानीय लोकतंत्र की सबसे महत्वपूर्ण इकाई है।

यदि पंचायत सक्रिय हो तो पूरे गांव का वातावरण प्रभावित हो सकता है।

पंचायत क्यों महत्वपूर्ण है?

क्योंकि पंचायत—

- सामुदायिक निर्णयों को प्रभावित करती है।
- सार्वजनिक मंच उपलब्ध कराती है।
- जनभागीदारी को संगठित कर सकती है।

सामाजिक संदेशों को व्यापक स्तर तक पहुँचा सकती है।

पंचायत क्या कर सकती है?

ग्राम सभाओं में विषय उठाना

नशामुक्ति संकल्प पारित करना

जनजागरण कार्यक्रम आयोजित करना

युवाओं के लिए गतिविधियाँ बढ़ाना

खेल एवं सामुदायिक संसाधनों को बढ़ावा देना

लोकसंकल्प समितियों को सहयोग देना

आदर्श पंचायत की कल्पना

एक ऐसी पंचायत—

- ✔ जो नशामुक्ति को विकास का विषय माने।
- ✔ जो युवाओं के लिए अवसर बढ़ाए।
- ✔ जो सामाजिक आयोजनों को सकारात्मक दिशा दे।
- ✔ जो लोकसंकल्प जैसी पहलों को समर्थन दे।

धार्मिक एवं आध्यात्मिक नेतृत्व की भूमिका

भारत एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं वाला देश है।

समाज के अनेक लोग धार्मिक और आध्यात्मिक नेतृत्व से प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

इसलिए धार्मिक मंच व्यवहार परिवर्तन के प्रभावी माध्यम बन सकते हैं।

क्यों महत्वपूर्ण हैं धार्मिक नेता?

क्योंकि उनके शब्द केवल सूचना नहीं देते, प्रेरणा भी देते हैं।

वे—

- नैतिक दिशा प्रदान करते हैं।
- संयम और आत्मनियंत्रण का संदेश देते हैं।
- सामाजिक एकता को मजबूत करते हैं।

धार्मिक मंचों से क्या संदेश दिया जा सकता है?

- ✔ नशामुक्त जीवन का महत्व
- ✔ स्वस्थ परिवार
- ✔ युवाओं की जिम्मेदारी
- ✔ सामाजिक कुरीतियों का त्याग
- ✔ सकारात्मक जीवन मूल्यों का प्रचार

www.loksankalp.org

एक महत्वपूर्ण सावधानी

लोकसंकल्प किसी धर्म, सम्प्रदाय या विचारधारा से जुड़ा अभियान नहीं है।

यह एक सामाजिक और सार्वजनिक हित का आंदोलन है।

इसलिए सभी धार्मिक और सामाजिक परंपराओं का सम्मान करते हुए नशामुक्त समाज का संदेश दिया जाता है।

सामाजिक संगठनों की भूमिका

समाज में अनेक संगठन वर्षों से जनहित के कार्य कर रहे हैं।

इनकी सबसे बड़ी शक्ति है—

जनविश्वास | **स्थानीय उपस्थिति** | **स्वयंसेवक नेटवर्क** | **सामाजिक अनुभव**

सामाजिक संगठन क्या कर सकते हैं?

जनजागरण अभियान

ग्राम स्तर की बैठकें

युवा कार्यक्रम

महिला सशक्तिकरण गतिविधियाँ

नशा छोड़ने वालों को सहयोग

सफलता कथाओं का संकलन

स्वयंसेवक : आंदोलन की ऊर्जा

हर बड़े सामाजिक आंदोलन की सफलता के पीछे हजारों स्वयंसेवकों का योगदान होता है।

लोकसंकल्प भी स्वयंसेवक आधारित मॉडल को महत्व देता है।

लोकसंकल्प वालंटियर

वालंटियर की भूमिका—

- ✔ जनजागरण
- ✔ सफलता कथाएँ संकलित करना

- ✔ ग्राम सभा सहयोग
- ✔ लोकसंकल्प वेबसाइट पर गतिविधियाँ अपलोड करना
- ✔ नशा छोड़ने के इच्छुक लोगों को सहायता सेवाओं से जोड़ना
- ✔ मासिक बैठकों का आयोजन

सामाजिक आयोजनों में सकारात्मक हस्तक्षेप

लोकसंकल्प विशेष रूप से उन सामाजिक अवसरों पर ध्यान देता है जहाँ नशे को परंपरा या मनुहार के रूप में स्वीकार किया जाता है।

हमारा दृष्टिकोण

हम किसी व्यक्ति या परिवार की आलोचना नहीं करते।

हम केवल यह आग्रह करते हैं कि—

सम्मान का प्रतीक भोजन, स्नेह और सद्भाव होना चाहिए,

न कि तंबाकू, शराब या अन्य नशीले पदार्थ।

नई सामाजिक परंपराएँ

लोकसंकल्प केवल पुरानी कुरीतियों का विरोध नहीं करता।

यह नई सकारात्मक परंपराएँ विकसित करना चाहता है।

जैसे—

www.loksankalp.org

- ✔ नशामुक्त विवाह
- ✔ नशामुक्त शोक सभाएँ
- ✔ नशामुक्त सामुदायिक कार्यक्रम
- ✔ पौधारोपण आधारित उत्सव
- ✔ रक्तदान, पुस्तकदान, पर्यावरण और सेवा आधारित आयोजन

सामुदायिक नेतृत्व का संयुक्त मॉडल

महिलाएँ

↓

पंचायत

↓

धार्मिक नेतृत्व

↓

सामाजिक संगठन

↓

वालंटियर नेटवर्क

↓

जनभागीदारी

↓

सामाजिक परिवर्तन

अध्याय 9 का निष्कर्ष

नशामुक्त समाज केवल परिवारों से नहीं बनेगा।

इसके लिए पूरे समुदाय का सहयोग आवश्यक है।

जब महिलाएँ नेतृत्व करें,

पंचायत समर्थन दे,

धार्मिक मंच प्रेरणा दें,

सामाजिक संगठन सक्रिय हों,

और नागरिक भागीदारी बढ़े,

तब नशे की सामाजिक स्वीकृति को चुनौती देना संभव हो जाता है।

चिंतन प्रश्न

आपके गांव में महिला समूह नशामुक्ति अभियान में क्या भूमिका निभा सकते हैं?

क्या ग्राम पंचायत लोकसंकल्प संकल्प पारित कर सकती है?

धार्मिक और सामाजिक नेतृत्व सकारात्मक संदेश कैसे दे सकते हैं?

आपके क्षेत्र में कौन-कौन से संगठन इस अभियान से जुड़ सकते हैं?

अध्याय 9 का सूत्र

> **“जब समुदाय का नेतृत्व जागता है, तब समाज की दिशा बदलती है।”**

10 अध्याय 10 : लोकसंकल्प का भविष्य

नशामुक्ति से स्वस्थ, जागरूक और आत्मनिर्भर समाज की ओर

प्रस्तावना

लोकसंकल्प केवल नशे के विरोध का अभियान नहीं है।

यदि किसी समाज से नशा कम हो जाए, लेकिन युवाओं के पास अवसर न हों, परिवारों में संवाद न हो, शिक्षा जीवन से न जुड़ी हो और समुदायों में सकारात्मक गतिविधियाँ न हों, तो समस्या किसी न किसी रूप में फिर सामने आ सकती है।

इसीलिए लोकसंकल्प केवल यह नहीं पूछता कि—

> **“युवा नशा क्यों कर रहा है?”**

बल्कि यह भी पूछता है—

> **“युवा किस प्रकार का जीवन चाहता है और समाज उसे क्या अवसर उपलब्ध करा रहा है?”**

नशामुक्ति अंतिम लक्ष्य नहीं है।

यह एक स्वस्थ, जागरूक, सक्षम और आत्मनिर्भर समाज की ओर बढ़ने का पहला कदम है।

केवल नशा छोड़ना पर्याप्त नहीं

कई बार समाज नशे को केवल व्यक्तिगत कमजोरी के रूप में देखता है।

लेकिन वास्तविकता अधिक जटिल है।

आज का युवा अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है—

बेरोजगारी | **कौशल की कमी** | **प्रतियोगी दबाव** | **मानसिक तनाव** | **सोशल मीडिया का प्रभाव** | **पारिवारिक संवाद की कमी** | **उद्देश्यहीनता**

अकेलापन | त्वरित सफलता की संस्कृति

इन परिस्थितियों में कुछ युवा नशे को तनाव से बचने का आसान रास्ता समझ लेते हैं।

इसलिए केवल नशा छोड़ने की अपील पर्याप्त नहीं है।

हमें बेहतर विकल्प भी उपलब्ध कराने होंगे।

सकारात्मक विकल्पों का समाज

लोकसंकल्प का मानना है कि—

> **“जहाँ अवसर होते हैं, वहाँ व्यसन की संभावना कम होती है।”**

इसलिए नशामुक्ति के साथ-साथ समाज को युवाओं के लिए सकारात्मक अवसरों का निर्माण भी करना होगा।

शिक्षा जो जीवन से जुड़ी हो

शिक्षा केवल परीक्षा पास करने का माध्यम नहीं होनी चाहिए।

उसे युवाओं को—

- सोचने,
- निर्णय लेने,
- समस्याओं को हल करने,
- समाज से जुड़ने,
- की क्षमता देनी चाहिए।
- कौशल और रोजगार
- आज लाखों युवा रोजगार की तलाश में हैं।
- नशामुक्ति का संबंध आर्थिक सशक्तिकरण से भी है।
- यदि युवा—
- कौशल सीखें,
- उद्यमिता अपनाएँ,
- स्थानीय अवसरों से जुड़ें,

तो उनके जीवन में उद्देश्य और आत्मविश्वास दोनों बढ़ते हैं।

कृषि में नए अवसर

ग्रामीण भारत का बड़ा हिस्सा कृषि पर निर्भर है।

लेकिन अनेक युवा खेती को अवसर के बजाय मजबूरी के रूप में देखने लगे हैं।

यह दृष्टिकोण बदलने की आवश्यकता है।

नई पीढ़ी और कृषि

आज कृषि में अनेक नए अवसर मौजूद हैं—

जैविक खेती | प्राकृतिक खेती | उद्यानिकी | पौधशालाएँ | औषधीय पौधे | कृषि प्रसंस्करण | एग्री-टेक | जल संरक्षण आधारित उद्यम

यदि युवाओं को इन अवसरों से जोड़ा जाए तो ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत हो सकती है।

खेल, कला और संस्कृति

हर युवा खिलाड़ी नहीं बन सकता।

लेकिन हर युवा को किसी न किसी सकारात्मक गतिविधि की आवश्यकता होती है।

क्यों?

क्योंकि खाली समय अक्सर गलत आदतों का प्रवेश द्वार बन जाता है।

इसलिए—

- खेल
- संगीत
- लोककला
- स्वयंसेवा

- नाटक
- साहित्य
- को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- डिजिटल युग की चुनौती

आज का युवा वास्तविक दुनिया से अधिक समय डिजिटल दुनिया में बिताता है।

सोशल मीडिया अवसर भी देता है और खतरे भी।

सोशल मीडिया के खतरे

तुलना की संस्कृति

अवास्तविक जीवनशैली

त्वरित प्रसिद्धि का दबाव

भ्रामक सामग्री

नशे का महिमामंडन

मानसिक तनाव

डिजिटल नागरिकता

लोकसंकल्प युवाओं को डिजिटल माध्यमों से दूर करने की बात नहीं करता।

बल्कि जिम्मेदार उपयोग की बात करता है।

www.loksankalp.org

हमें क्या सीखना होगा?

तथ्य और अफवाह में अंतर

समय प्रबंधन

सकारात्मक सामग्री का चयन

डिजिटल अनुशासन

ऑनलाइन सुरक्षा

मानसिक स्वास्थ्य और नशामुक्ति

अनेक बार नशे की जड़ मानसिक तनाव में होती है।

इसलिए मानसिक स्वास्थ्य पर खुलकर बात करना आवश्यक है।

हमें क्या बदलना होगा?

हमें यह स्वीकार करना होगा कि—

- तनाव सामान्य है।
- सहायता मांगना कमजोरी नहीं है।
- संवाद समाधान का हिस्सा है।
- मानसिक स्वास्थ्य भी स्वास्थ्य है।

नशे की नई चुनौती : सिंथेटिक ड्रग्स

आज नशे का स्वरूप बदल रहा है।

परंपरागत नशों के साथ-साथ कई नए सिंथेटिक और रासायनिक नशीले पदार्थ युवाओं तक पहुँच रहे हैं।

इनकी विशेषताएँ हैं—

अधिक लतकारी | अधिक खतरनाक | अधिक महंगे | संगठित तस्करी से जुड़े

इसलिए जागरूकता, कानून और सामुदायिक सतर्कता तीनों आवश्यक हैं।

नागरिक सतर्कता का महत्व

लोकसंकल्प का विश्वास है कि समाज केवल दर्शक नहीं हो सकता।

यदि समुदाय जागरूक और संगठित हो तो अवैध गतिविधियों पर प्रभावी नियंत्रण संभव है।

जिम्मेदार नागरिक क्या कर सकता है?

- ✔ जागरूकता फैलाना
- ✔ युवाओं का मार्गदर्शन करना
- ✔ सहायता की आवश्यकता वाले लोगों को जोड़ना
- ✔ वैधानिक माध्यमों से सूचना देना
- ✔ सकारात्मक वातावरण बनाना

नशामुक्ति से आगे

लोकसंकल्प का अंतिम लक्ष्य केवल नशामुक्त समाज नहीं है।

हम ऐसा समाज चाहते हैं—

जहाँ— | शिक्षा सार्थक हो, | युवा सक्षम हों, | परिवार मजबूत हों, | महिलाएँ सशक्त हों, | गांव सक्रिय हों, | पर्यावरण सुरक्षित हो, | सामाजिक विश्वास बढ़े।

www.loksankalp.org

लोकसंकल्प और सकारात्मक सामाजिक पूंजी

समाज की सबसे बड़ी शक्ति केवल धन नहीं होती।

सबसे बड़ी शक्ति होती है—

विश्वास | सहयोग | सहभागिता | सामुदायिक संबंध

इन्हें ही सामाजिक पूंजी (Social Capital) कहा जाता है।

लोकसंकल्प क्या करना चाहता है?

लोकसंकल्प—

नशे के विरुद्ध संघर्ष के साथ-साथ

सामाजिक पूंजी का पुनर्निर्माण करना चाहता है।

एक नए भारत की कल्पना

कल्पना कीजिए—

- एक ऐसा भारत—
- जहाँ युवा नशे नहीं, नवाचार की बात करें।

जहाँ सामाजिक आयोजनों में नशे की मनुहार नहीं, संस्कारों का सम्मान हो।

जहाँ परिवार संवाद के केंद्र हों।

जहाँ विद्यालय जीवन निर्माण के केंद्र हों।

जहाँ ग्राम सभाएँ केवल औपचारिक बैठकें नहीं, सामाजिक परिवर्तन के मंच हों।

जहाँ नागरिक केवल दर्शक नहीं, भागीदार हों।

लोकसंकल्प का राष्ट्रीय दृष्टिकोण

लोकसंकल्प का सपना केवल कुछ गांवों या जिलों तक सीमित नहीं है।

यह एक ऐसे राष्ट्रीय जनआंदोलन की परिकल्पना करता है जिसमें—

- शिक्षक,
- विद्यार्थी,
- अभिभावक,
- महिलाएँ,
- पंचायतें,
- सामाजिक संगठन,
- युवा,
- मिलकर नई सामाजिक संस्कृति का निर्माण करें।
- अंतिम आह्वान
- हम किसी व्यक्ति के विरुद्ध नहीं हैं।
- हम किसी पीढ़ी को दोष नहीं देते।
- हम किसी समुदाय की आलोचना नहीं करते।

हम केवल एक सकारात्मक विकल्प प्रस्तुत करते हैं—

> **“नशे को नहीं, संस्कारों को सामाजिक स्वीकृति।”**

www.loksankalp.org

लोकसंकल्प घोषणा

हम मानते हैं कि—

- नशामुक्त समाज संभव है।
- सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन संभव है।
- युवा शक्ति परिवर्तन ला सकती है।
- परिवार दिशा दे सकते हैं।
- शिक्षक नेतृत्व कर सकते हैं।
- समुदाय नई परंपराएँ विकसित कर सकते हैं।

और भारत एक स्वस्थ, जागरूक और आत्मनिर्भर समाज की ओर बढ़ सकता है।

समापन संकल्प

> **“मैं संकल्प लेता/लेती हूँ कि मैं स्वयं स्वस्थ, सकारात्मक और नशामुक्त जीवन का पालन करूँगा/करूँगी। मैं नशे की सामाजिक स्वीकृति को बढ़ावा नहीं दूँगा/दूँगी, युवाओं को सकारात्मक अवसरों से जोड़ने का प्रयास करूँगा/करूँगी, और अपने परिवार, विद्यालय, गांव तथा समाज में जागरूक, जिम्मेदार और सहयोगी नागरिक के रूप में योगदान दूँगा/दूँगी।”**

अंतिम सूत्र

> **“लोकसंकल्प केवल नशे के विरुद्ध संघर्ष नहीं, बल्कि स्वस्थ, जागरूक, संस्कारित और आत्मनिर्भर समाज के निर्माण का सामूहिक संकल्प है।”**

1 परिशिष्ट 1 : ग्राम लोकसंकल्प सभा आयोजन प्रारूप

कार्यक्रम विवरण

विवरण	जानकारी
ग्राम का नाम	
पंचायत	
ब्लॉक	
जिला	
आयोजन तिथि	
आयोजन स्थल	
आयोजक संस्था	
मुख्य समन्वयक	
सहयोगी शिक्षक	

www.loksank

सहभागिता विवरण

वर्ग	संख्या
विद्यार्थी	
अभिभावक	
महिलाएँ	
युवा	
शिक्षक	
अन्य नागरिक	
कुल सहभागिता	

कार्यक्रम के मुख्य बिंदु

- ☐ लोकसंकल्प परिचय
- ☐ नशे की सामाजिक स्वीकृति पर संवाद
- ☐ युवाओं की चुनौतियों पर चर्चा
- ☐ सामूहिक संकल्प
- ☐ ग्राम समिति गठन
- ☐ वेबसाइट पंजीकरण
- ☐ सफलता कहानी साझा

सभा के प्रमुख सुझाव

....

....

....

सामूहिक संकल्प लिया गया?

- ☐ हाँ
- ☐ नहीं

समूह फोटो अपलोड

- ☐ किया गया

2 परिशिष्ट 2 : लोकसंकल्प ग्राम समिति गठन प्रारूप

www.loksankalp.org

ग्राम का नाम ....

गठन तिथि ....

संरक्षक

1. ....

समिति सदस्य

क्रम	नाम	भूमिका	मोबाइल
1		अध्यक्ष	
2		सचिव	
3		शिक्षक प्रतिनिधि	
4		महिला प्रतिनिधि	
5		युवा प्रतिनिधि	
6		विद्यार्थी प्रतिनिधि	
7		पंचायत प्रतिनिधि	
8		सामाजिक कार्यकर्ता	

समिति की जिम्मेदारियाँ

- ✔ मासिक बैठक
- ✔ नशामुक्ति जनजागरण
- ✔ युवा संवाद
- ✔ सकारात्मक गतिविधियाँ
- ✔ सफलता कथाएँ
- ✔ नशामुक्त आयोजनों को प्रोत्साहन
- ✔ loksankalp.org पर नियमित अपडेट

3 परिशिष्ट 3 : मासिक समीक्षा बैठक रजिस्टर

बैठक संख्या ....

तिथि ....

स्थान ....

उपस्थिति ....

कुल सदस्य: ______ ....

उपस्थित: ______ ....

एजेंडा

- ☐ नशामुक्ति गतिविधियाँ
- ☐ युवाओं की स्थिति
- ☐ नए स्वयंसेवक
- ☐ सफलता कथाएँ
- ☐ आगामी कार्यक्रम

www.loksankalp.org

प्रमुख निर्णय

1. ....

2. ....

3. ....

अगली बैठक ....

तिथि : ____________

4 परिशिष्ट 4 : सफलता कहानी (Success Story) प्रारूप

शीर्षक ....

व्यक्ति / परिवार / संस्था का नाम ....

पहले स्थिति क्या थी?

....

....

परिवर्तन कैसे शुरू हुआ?

....

....

आज क्या बदलाव दिखाई दे रहा है?

....

समाज के लिए संदेश

फोटो / वीडियो

- [ ] संलग्न

5 परिशिष्ट 5 : नशामुक्त सामाजिक आयोजन सत्यापन प्रारूप

आयोजन का प्रकार

- [ ] विवाह
- [ ] शोक सभा / मृत्यु उपरांत बैठक
- [ ] पारिवारिक समारोह
- [ ] धार्मिक आयोजन
- [ ] अन्य

आयोजक परिवार

क्या आयोजन में किसी प्रकार का नशा परोसा गया?

- [ ] नहीं
- [ ] हाँ

क्या परिवार लोकसंकल्प संकल्प का पालन करता पाया गया?

- [ ] हाँ
- [ ] नहीं

अवलोकनकर्ता

फोटो / वीडियो

- [ ] अपलोड किया गया

विशेष टिप्पणी

6 परिशिष्ट 6 : नशा छोड़ने के इच्छुक व्यक्ति सहायता प्रारूप

नाम (वैकल्पिक)

आयु

ग्राम

उपयोग किया जाने वाला नशा

- [ ] तंबाकू
- [ ] बीड़ी

www.loksankalp.org

- ☐ सिगरेट
- ☐ शराब
- ☐ अन्य

सहायता की आवश्यकता

- ☐ परामर्श
- ☐ उपचार
- ☐ पुनर्वास
- ☐ परिवार परामर्श

संपर्क विवरण ....

सहमति

- ☐ मैं उपचार एवं सहायता हेतु संपर्क की अनुमति देता/देती हूँ।

www.loksankalp.org

7 परिशिष्ट 7 : लोकसंकल्प वालंटियर पंजीकरण

नाम ....

आयु ....

ग्राम ....

व्यवसाय ....

मोबाइल ....

मैं किन गतिविधियों में सहयोग देना चाहता/चाहती हूँ?

- ☐ जनजागरण
- ☐ ग्राम सभा
- ☐ सोशल मीडिया
- ☐ सफलता कहानी
- ☐ युवा कार्यक्रम
- ☐ वेबसाइट अपडेट
- ☐ नशामुक्ति सहायता

8 परिशिष्ट 8 : शिक्षक दिवस विशेष ग्राम संकल्प सभा शपथ

मैं आज शिक्षक दिवस के पावन अवसर पर यह संकल्प लेता/लेती हूँ कि—

मैं स्वयं किसी भी प्रकार के नशे से दूर रहूँगा/रहूँगी।

मैं अपने परिवार, मित्रों और समाज को नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करूँगा/करूँगी।

मैं नशे की सामाजिक स्वीकृति का समर्थन नहीं करूँगा/करूँगी।

मैं विवाह, शोक सभा, पारिवारिक समारोहों एवं अन्य सामाजिक आयोजनों में किसी भी प्रकार के नशीले पदार्थ की मनुहार, वितरण अथवा प्रोत्साहन नहीं करूँगा/करूँगी।

मैं बच्चों एवं युवाओं को स्वस्थ, सकारात्मक एवं नशामुक्त जीवन के लिए प्रेरित करूँगा/करूँगी।

मैं नशा छोड़ने के इच्छुक व्यक्तियों की सहायता करूँगा/करूँगी।

मैं स्वस्थ, संस्कारित, जागरूक एवं नशामुक्त समाज निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाऊँगा/निभाऊँगी।

जय हिन्द।

9 परिशिष्ट 9 : loksankalp.org पर रिपोर्ट अपलोड करने हेतु चेकलिस्ट

कार्यक्रम के बाद सुनिश्चित करें कि:

- ☐ ग्राम का नाम दर्ज किया गया
- ☐ विद्यालय / संस्था का नाम दर्ज किया गया
- ☐ प्रतिभागियों की संख्या दर्ज की गई
- ☐ समूह फोटो अपलोड की गई
- ☐ संकल्प का फोटो अपलोड किया गया
- ☐ 100–200 शब्द की रिपोर्ट लिखी गई
- ☐ समिति गठन की जानकारी अपलोड की गई
- ☐ सफलता कहानी (यदि हो) साझा की गई
- ☐ अगले कार्यक्रम की योजना दर्ज की गई

www.loksankalp.org

10 परिशिष्ट 10 : लोकसंकल्प घोषणा पत्र

हम, इस ग्राम/संस्था के नागरिक, यह घोषणा करते हैं कि—

1. नशे की सामाजिक स्वीकृति को बढ़ावा नहीं देंगे।
2. सामाजिक आयोजनों को नशामुक्त बनाने का प्रयास करेंगे।
3. बच्चों और युवाओं को सकारात्मक अवसर प्रदान करने का समर्थन करेंगे।
4. नशा छोड़ने वालों का सम्मान और सहयोग करेंगे।
5. स्वस्थ, जागरूक और जिम्मेदार समाज निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएँगे।

मेरा गांव – मेरा संकल्प – नशामुक्त समाज

> **“नशे को नहीं, संस्कारों को सामाजिक स्वीकृति”**

मेरा गांव – मेरा परिवार – मेरा संकल्प – नशामुक्त समाज।

लोकसंकल्प — नशे की सामाजिक स्वीकृति के विरुद्ध जनआंदोलन।

जय हिन्द।

www.loksankalp.org

loksankalp.org · X @loksankalp26 · Facebook /LokSankalp26 · Instagram @loksankalp26

वेबसाइट पर जाने के लिए स्कैन करें

loksankalp.org

द्वारा

प्रोफ़ेसर श्यामसुन्दर ज्याणी

(संयुक्त राष्ट्र द्वारा भूमि संरक्षण के सर्वोच्च सम्मान "लैंड फॉर लाइफ अवार्ड" से सम्मानित)

संयोजक

नई किरण नशा मुक्ति केंद्र
राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर

www.familialforestry.org
X: @habitathealer · F: @habitathealer · Insta: @habitat_healer

पुस्तिका डिज़ाइन : Communication Department, Familial Forestry Mission

copyright loksankalp.org